RADIANT ACADEMY
(AFFILIATED TO CBSE)
B-180, sector-55, noida Ph: 120-4314312/ 6514636
Mob. : 9350251631/ 9674710772 E-mail: radiantacademynoida@yahoo.com
RADIANT ACADEMY
(J.H.S.) (AFFILIATED TO CBSE)
Sorkha, Sector- 115, noida on Fng Ph: 120- 6495106,
Mob. : 9873314814/ 9674710772 E-mail: radiantacademysorkha@yahoo.com
Let your child Explore the world with us in a Secure Environment!
We are a Co-Educational Medium Senior Secondary School
imparting quality education since the last 20 years.
FROM ADMISSION OPEN NURSERY TO CLASS XI Transport Facility Available
FACILITIES AVAILABLE AT SCHOOL : ●Highly Qualified And Trained Faculty
well Quipped Labs ●CCTV Controlled Environment ●Activity Based Learning
● Well Equipped Library ●GPS Enable Buses

आज की खबर आज ही

जनाकांक्षाओं का सजग प्रहरी

चेतना मंच

वर्ष : 27 अंक : 228 website:www.chetnamanch.com नोएडा, बृहस्पतिवार, 07 अगस्त, 2025 Chetna Manch Chetna Manch मूल्य 2.00 रु. पेज: 8

ट्रंप के टैरिफ अटैक पर प्रधानमंत्री की दो टूक

किसानों का हित सबसे पहले, कोई भी कीमत चुकाने को तैयार : प्रधानमंत्री

● भारत का सख्त रूख कृषि क्षेत्र में विदेशी दखल मंजूर नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की तरफ से भारत पर लगाया गया 25 फीसदी आयात शुल्क आज से प्रभावी हो जाएगा। इस महीने के अंत तक भारत से अमेरिका जाने वाले उत्पादों पर कुल टैरिफ 50 फीसदी तक पहुंच सकता है। इस बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पहली बार ट्रंप के टैरिफ अटैक का करारा जवाब दिया है।

टैरिफ वॉर के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के किसानों के हक में बड़ा बयान दिया है। पीएम मोदी ने कहा है कि हमारे लिए किसानों के हितों की रक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। भारत किसानों, मछुआरों और डेयरी किसानों के हितों से कभी समझौता नहीं करेगा। उन्होंने कहा कि उन्हें पता है कि इसकी भारी कीमत उन्हें चुकानी पड़ेगी और वे इसके लिए तैयार हैं।

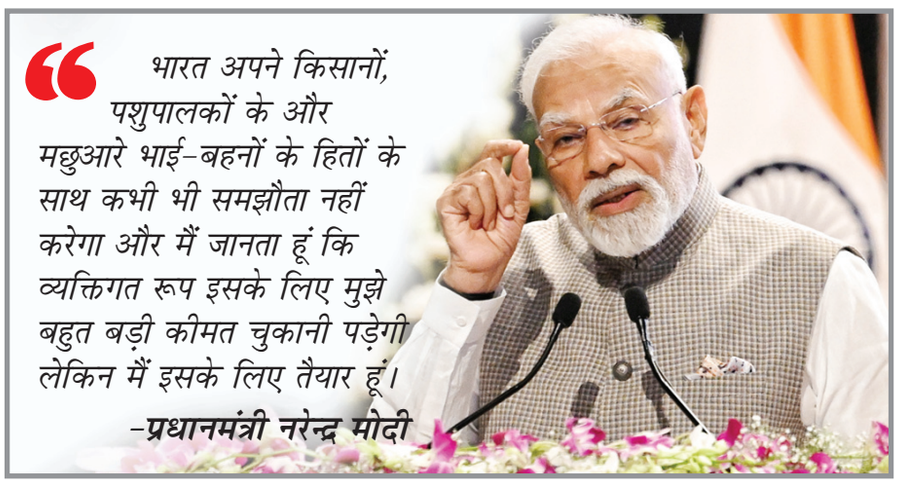

नई दिल्ली में एम.एस. स्वामीनाथन शताब्दी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा कि सरकार किसानों की आय बढ़ाने और खेती पर खर्च कम करने के लिए लगातार काम कर रही है।

पीएम मोदी ने कहा कि देश में सोयाबीन, सरसों, मुंगफली का उत्पादन रिकॉर्ड स्तर पर बढ़ा है। उन्होंने जोर देकर कहा कि, 'हमारे लिए किसानों का हित सर्वोच्च प्राथमिकता है। भारत अपने किसानों, पशुपालकों के और मछुआरे भाई-बहनों के हितों के साथ कभी भी समझौता नहीं करेगा और मैं जानता हूं कि व्यक्तिगत रूप इसके लिए मुझे बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी लेकिन मैं इसके लिए तैयार हूं। मेरे देश के किसानों के लिए, मेरे देश के मछुआरों के लिए, मेरे देश के पशुपालकों के लिए आज भारत तैयार है।'

पीएम मोदी ने (शेष पृष्ठ-4 पर)

किसानों व डेयरी किसानों पर गंभीर प्रभाव

बता दें कि अमेरिका-भारत व्यापार समझौते में भारत के किसानों और डेयरी किसानों के हितों पर गंभीर प्रभाव पड़ रहा था। क्योंकि अमेरिका ने भारतीय कृषि और डेयरी बाजारों तक अपने प्रोडक्ट को व्यापक रूप से पहुंचाने की मांग की थी। अमेरिका चाहता था कि भारत अपने उच्च टैरिफ (20-100 प्रतिशत) और गैर-टैरिफ बाधाओं को हटाए, ताकि अमेरिकी कृषि उत्पाद जैसे सेब, बादाम, अखरोट, और जेनेटिकली मॉडिफाइड फसलों सोयाबीन और मक्का भारत के बाजार तक बेरोक-टोक आ सके।

साथ ही अमेरिका डेयरी उत्पादों विशेष रूप से पनीर और दूध पाउडर के लिए बाजार खोलने की मांग कर रहा था, जो भारत के 8 करोड़ डेयरी किसानों के लिए खतरा था। अमेरिकी डेयरी प्रोडक्ट भारत में धार्मिक रूप से संवेदनशील मुद्दा है। (शेष पृष्ठ-4 पर)

पत्रकार हत्याकांड में शामिल दो शूटर मुठभेड़ में ढेर

सीतापुर (एजेंसी)। सीतापुर में पत्रकार राघवेन्द्र बाजपेयी की हत्या में शामिल शूटरों को यूपी पुलिस और एसटीएफ की टीम ने एनकाउंटर में मार गिराया है। पत्रकार की हत्या एक मन्दिर के पुजारी ने 4 लाख रूपये की सुपारी देकर कराई थी।

उत्तर प्रदेश के सीतापुर जिले में मार्च माह में हुई पत्रकार राघवेंद्र बाजपेयी की हत्या के मामले में शामिल दो शूटरों को देर रात स्पेशल टास्क फोर्स (STF) ने मुठभेड़ में मार गिराया। दोनों आरोपी रिजवान राजू और अकील खान उर्फ़ संजय सगे भाई थे और उन पर 1-1 लाख का इनाम घोषित था।

एनकाउंटर घटना पिसावा थाना क्षेत्र के अंतर्गत हुआ, जहाँ STF और स्थानीय पुलिस संयुक्त रूप से वाहनों की चेकिंग कर रही थी। इसी दौरान एक संदिग्ध बाइक को रोकने की कोशिश की गई, लेकिन बाइक सवारों ने फायरिंग शुरू कर दी। जवाबी कार्रवाई में दोनों आरोपी घायल हो गए और अस्पताल ले जाते समय उनकी मौत हो गई।

आपको बता दें कि बीते 8 मार्च को पत्रकार राघवेंद्र बाजपेयी की हत्या उस समय हुई थी जब वह अपनी बाइक से जा रहे थे। हाईवे पर उनकी बाइक को रोककर हमलावरों ने ताबड़तोड़ गोलियां बरसाई। मामले की जांच में सामने आया कि हत्या की साजिश कारदेव बाबा मंदिर के पुजारी शिवानंद बाबा उर्फ विकास राठौर ने रची थी।

पत्रकार ने पुजारी को मंदिर परिसर में आपत्तिजनक स्थिति में देख लिया था, जिससे नाराज होकर पुजारी ने हत्या की योजना बनाई। दोनों शूटरों को सुपारी देकर हत्या करा दी थी। पुजारी पहले ही जेल में बंद है।

11वीं की छात्रा को भगा ले गया पड़ोसी

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। थाना दादरी क्षेत्र के काशीराम कॉलोनी से स्कूल के लिए निकली 11वीं कक्षा के छात्रा वापस नहीं लौटी। किशोरी के पिता ने पड़ोस में रहने वाले युवक के खिलाफ उसकी पुत्री को बहला-फुसलाकर भगा ले जाने के आरोप में मुकदमा दर्ज कराया है। थाना दादरी में दर्ज कराई रिपोर्ट में काशीराम कॉलोनी निवासी विनोद (काल्पनिक नाम) ने बताया कि उनकी (17 वर्षीय) बेटी 11वीं कक्षा की छात्रा थी। 5 अगस्त को उनकी बेटी सुबह घर से स्कूल जाने के लिए निकल गई थी। स्कूल की छुट्टी होने के बाद जब वह घर नहीं पहुंची तो परिजनों ने उसकी तलाश की। स्कूल में पूछताछ करने पर (शेष पृष्ठ-4 पर)

चोरी की बाइक के साथ दो गिरफ्तार

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। थाना ईकोटेक-3 पुलिस ने दो वाहन चोरों को गिरफ्तार किया है इनके पास से चोरी की बाइक व चाकू बरामद हुआ है।

थाना प्रभारी ने बताया कि पुलिस टीम ने लखनावली गांव की तरफ से बाइक पर आ रहे दो युवकों को रूकने का इशारा किया। पुलिस को देखकर बाइक सवारों ने भागने का प्रयास किया, लेकिन पुलिसकर्मियों ने उन्हें दबोच लिया। तलाशी में उनके पास से चाकू बरामद हुआ। पूछताछ में पकड़े गए आरोपियों ने अपने नाम प्रशांत पुत्र पप्पू राठौर व घनश्याम पुत्र कुमार सिंह बताया। दोनों आरोपी हाल में मुल्ला कॉलोनी ग्राम कुलेसरा में किराए पर रह रहे हैं। दोनों चोरों ने स्वीकार किया कि उन्होंने यह बाइक हल्द्वानी में उस्मान प्रधान की मार्केट के पास से चोरी की थी। चोरी करने के बाद उन्होंने बाइक को डंपिंग गार्डन के पीछे खाली स्थान पर छुपाकर खड़ा कर दिया था। आज वह इस बाइक को बेचने के लिए ले जा रहे थे, लेकिन उससे पहले ही पुलिस ने उन्हें दबोच लिया।

स्कूल की फीस जमा न कराने पर पिता के साथ मारपीट

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। थाना दनकौर में एक व्यक्ति ने स्कूल के कर्मचारियों पर मारपीट करने के आरोप में मुकदमा दर्ज कराया है। पीड़ित का आरोप है कि उसके बच्चे की तबीयत खराब होने की झूठी सूचना देकर उसे स्कूल बुलवाया गया और बकाया फीस जमा न करने पर उसके साथ मारपीट की गई। ग्राम पतला खेड़ा निवासी निरंजन सिंह ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि उनका बेटा चिराग खेरली हाफीजपुर गांव स्थित पैराडाइज स्कूल में चौथी कक्षा का छात्र है। 5 अगस्त की सुबह स्कूल से फोन आया कि उसके बेटे की तबीयत खराब है। वह जाकर उसे ले जाएं। निरंजन सिंह के मुताबिक फोन आने के बाद वह अपने बेटे को लेने के लिए स्कूल चला गया। स्कूल के गेट पर पहले से खड़े कुणाल पुत्र धर्मेंद्र व 3-4 अन्य स्कूल कर्मचारियों ने उसे गेट पर रोक लिया। इन लोगों ने कहा कि चिराग की फीस बकाया है। स्कूल की फीस जमा करने के बाद ही वह (शेष पृष्ठ-4 पर)

बीएसएफ का जवान पत्नी को मारने पर उतारू

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। थाना जेवर में एक महिला ने अपने पति पर प्रताड़ित करने के आरोप में मुकदमा दर्ज कराया है। पीड़ित महिला का आरोप है कि बीएसएफ में कार्यरत उसका पति आए दिन उसके साथ बुरी तरह मारपीट करता है। थाना क्षेत्र के एक गांव के रहने वाली रीमा (काल्पनिक नाम) ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि उसके शादी 12 वर्ष पूर्व जनपद अलीगढ़ निवासी जितेंद्र कुमार के साथ हुई थी। उसका पति जितेंद्र कुमार बीएसएफ में सेवारत है। शादी के कुछ समय बाद ही जितेंद्र कुमार ने उसके साथ (शेष पृष्ठ-4 पर)

दुकान लगाने पर की पिटाई

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। सड़क किनारे दुकान लगाने के विवाद में एक दुकानदार की तीन लोगों ने पिटाई कर दी। मारपीट में दुकानदार को सिर में गंभीर चोट आई। दुकानदार की पत्नी ने थाना बिसरख में आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। पुलिस ने दो माह बाद इस मामले को दर्ज किया है। इटेडा गांव में रहने वाली गुलशन ने पुलिस की शिकायत में बताया कि उसके पति तैयब अजनारा होम्स चौराहे के पास सिलाई की दुकान लगाते हैं। 8 जून को तैयब दुकान लगाने के लिए अजनारा होम्स के चौराहे पर पहुंचे। पास में ही दुकान लगाने वाले सुनील, अनिल और उसके दोस्त ने तैयब को दुकान लगाने से मना किया। इस बात को लेकर विवाद हो गया। सुनील, अनिल और उसके दोस्त ने तैयब के साथ मारपीट कर उसे घायल कर दिया। मारपीट में तैयब के सिर में गंभीर चोटें आई।

ड्रोन देखने गए युवक को पड़ोसियों ने पीटा

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। देहात क्षेत्र में ड्रोन उड़ने की अफवाहों से जहां लोगों की नींद उड़ी हुई है। वहीं अब यह मारपीट का भी कारण बन रहे हैं। ऐसा ही एक मामला थाना दनकौर क्षेत्र के ग्राम रोशनपुर में सामने आया है। ड्रोन उड़ने का शोर मचाने पर जब एक युवक घर से बाहर निकाला तो पड़ोसियों ने उसे मारपीट कर घायल कर दिया। ग्राम रोशनपुर निवासी सचिन कुमार ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि 4 अगस्त की रात्रि को गांव में संदिग्ध ड्रोन उड़ने का शोर मचा। ड्रोन को देखने के लिए गांव के बच्चे शोर मचाते हुए भागते हुए गली में जा रहे थे। इन बच्चों के पीछे वह भी चला गया। गांव के ही रहने वाले जगत सिंह ने उसे जातिसूचक शब्दों से संबोधित करते हुए उसके साथ गाली-गलौज शुरू कर दी। उसने जब इस बात का विरोध किया तो जगत सिंह ने अपने बेटे दिनेश को मौके पर बुला लिया। दिनेश और जगत सिंह ने उसके साथ लोहे की रॉड से मारपीट की। मारपीट के दौरान सिर में (शेष पृष्ठ-4 पर)

गांजा पीकर डॉग के साथ भयंकर क्रूरता

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। गांजे के नशे में केयरटेकर ने फीमेल डॉग के साथ अमानवीय क्रूरता की। डॉग के साथ इतनी भयंकर तौर से क्रूरता की थी कि उसकी चार हड्डियां टूट गई और निजी अंगों में भी गंभीर चोट आई है और उसे पैरालिसिस (लकवा) हो गया है। डॉग की मालकिन ने केयरटेकर के खिलाफ थाना बिसरख में मुकदमा दर्ज कराया है।

रोजा याकूबपुर में रहने वाली प्रिया (काल्पनिक नाम) ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि उन्होंने अपनी फीमेल डॉग की देखभाल के लिए आरिफ हुसैन निवासी मनेरी बिगहा बिहार को केयरटेकर के रूप में रखा था।

3 अगस्त को वह परिवार सहित घर से बाहर गई थी। कुछ देर बाद जब वह वापस घर पहुंची तो उनकी डॉग की हालत बहुत खराब थी। उनकी फीमेल डॉग पूरी तरह से लहूलुहान होकर फर्श पर पड़ी हुई थी। उसके निजी अंगों से भी खून बह रहा था। मौके पर मौजूद आरिफ नशे में था परिजनों ने जब उसकी तलाशी ली तो उसकी जेब से गांजा और वियाग्रा की दवाई मिली। (शेष पृष्ठ-4 पर)

झुग्गी-झोपड़ी वालों का प्रदर्शन टला

नोएडा (चेतना मंच)। आज नोएडा प्राधिकरण के एसीईओ संजय खत्री ने झुग्गी-झोपड़ी सेवा उत्थान समिति संयुक्त मोर्चा के प्रतिनिधियों के साथ सेक्टर-6 स्थित बोर्ड रूम में बैठक की। बैठक में उन्होंने आश्वासन दिया कि इनकी मांगों पर कार्यवाही की जाएगी। इसी के मददेनजर 12 अगस्त को प्राधिकरण पर होने वाला प्रदर्शन फिलहाल टाल दिया गया है। मोर्चा के अध्यक्ष उदय सिंह के नेतृत्व में हुई बैठक में एसीईओ के समक्ष पांच प्रमुख मांगें रखी गई। पहली मांग थी कि किरायेदारी का आरोप लगाकर सेक्टर-122 में फ्लैटों का आवंटन निरस्तीकरण के नोटिस वापस लिए जाएं। जर्जर फ्लैटों की तुरंत मरम्मत की जाए। बाकी बचे झुग्गीवासियों को (शेष पृष्ठ-4 पर)

ठेकों के खिलाफ जनस्वास्थ्य विभाग ने चलाया अभियान

नोएडा (चेतना मंच)। नोएडा प्राधिकरण के जनस्वास्थ्य विभाग ने आज कई स्थानों पर शराब के ठेकों पर गंदगी फैलाए जाने पर सघन अभियान चलाया। इस दौरान अंग्रेजी शराब के ठेकों के अनुज्ञापियों को कड़ी चेतावनी दी गई।

प्राधिकरण के महाप्रबंधक (सिविल, जनस्वास्थ्य व टीएसी) एसपी सिंह के नेतृत्व में आज सेक्टर-44, छलेरा आदि कई स्थानों पर अभियान चलाया गया। कई ठेकों के पास काफी गंदगी पाई गई।

इस मौके पर उन्होंने चेतावनी दी कि यदि फिर गंदगी मिली तो उन पर जुर्माना ठोंका जाएगा तथा अन्य विधिक कार्यवाही की जाएगी। इस दौरान ओएसडी इंदु प्रकाश सिंह तथा प्राधिकरण के जनस्वास्थ्य विभाग के एनजीओ पदाधिकारी व कर्मचारी मौजूद थे।

संदीप चन्द्रा बने ग्रेटर नोएडा में प्रधान महाप्रबंधक

नौएडा
एक उत्कृष्ट क्षेत्र

नोएडा (चेतना मंच)। संदीप चन्द्रा को ग्रेटर नोएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण में प्रधान महाप्रबंधक (सिविल) नियुक्त किया गया है। इसके पूर्व श्री चंद्रा यूपीसीडा में प्रधान महा प्रबंधक(सिविल) के पद पर तैनात थे।

औद्योगिक विकास एवं अवस्थापना विभाग के संयुक्त सचिव जयवीर सिंह ने उक्त नियुक्त करने का कार्यालय ज्ञाप जारी किया है। इसमें उन्होंने संदीप चन्द्रा को निर्देश दिये हैं कि वे स्वत: कार्यमुक्त करते हुए ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण में तुरंत प्रभाव से पद समेत तैनाती ग्रहण करें तथा आख्या प्रस्तुत कर विभाग को अवगत कराएं।

फोर्टिस के पास बनेगी पहली ऑटोमेटिड पजल पार्किंग

4 मंजिला पार्किंग में 100 वाहन हो सकेंगे खड़े

ऑटोमेटिक हर फ्लोर में शिफ्ट हो सकेंगे वाहन

नोएडा (चेतना मंच)। नोएडा प्राधिकरण सेक्टर-62 में फोर्टिस अस्पताल के पास पहली बार ऑटोमैटिड पजल पार्किंग का निर्माण करने जा रहा है। इसमें करीब 23 करोड़ की लागत आएगी। यह पार्किंग 4 फ्लोर की होगी तथा इसकी क्षमता 100 वाहनों के पार्किंग की होगी। पार्किंग का निर्माण नोएडा प्राधिकरण करेगा तथा संचालन चयनित कंपनी करेगी।

दरअसल ये पार्किंग ऑटोमैटिड है। इसमें गाड़िया ग्राउंड से एक फ्लोर से दूसरे फ्लोर में शिफ्ट होती है। उसी तरह नीचे आती है। ये पूरा काम मशीनों के जरिए होता है। इसलिए इसमें सेंसर लगाए गए है। यदि कोई बच्चा या जानवर गलती से पार्किंग के अंदर आ जाए तो ऑटोमैटिक जहां कार है वहीं स्थिर हो जाएगी। वो नीचे नहीं आएगी ताकि इसके नीचे कोई दब न जाए। इसकी रेंज तय की जा सकती है। जिसे पीली लाइन से इंडीकेट किया जा सकता है।

ये पार्किंग हाइड्रोलिक पार्किंग से अलग होती है। ऑटोमेटिड पजल पार्किंग एक पजल गेम की तरह है। जिसमें जितने पार्किंग स्लॉट होते है उतने ही स्टैंड होते है। जो ऊपर, नीचे, दाय और बाय मूवबेल होते है। इसे ऐसे समझे एक कार पार्किंग के लिए आती है। उसे ग्राउंड के स्टैंड पर खड़ा किया। उसे चौथे फ्लोर पर कार खड़ी करनी है। ऐसे में पूरा स्टैंड सेंसर के जरिए कार समेत ऊपर उठेगा और चौथे फ्लोर पर जाकर सेट हो जाएगा। नीचे खाली स्पेस पर दूसरा स्टैंड ऑटोमैटिक शिफ्ट हो जाएगा।

इस पूरे काम में करीब 3 से 6 मिनट का समय लगता है। यानी मल्टीलेवल और हाइड्रोलिक या अन्य स्थानों पर पार्किंग करने पर गाड़ी निकालने और खड़ा करने में आपको 15 से 20 मिनट का समय लगता है। लेकिन इसमें कार मजह 3 से 6 मिनट पर लग जाती है और बाहर भी आ जाती है। नोएडा में चार फ्लोर ऑटोमैटिड पजल पार्किंग बनाने पर विचार किया जा रहा है। इसके प्रत्येक फ्लोर पर 25 कार आसानी से पार्क हो सकेंगे।

इस तरह की पार्किंग के निर्माण में ज्यादा स्पेस की जरुरत

कूड़ा गाड़ी रोकने पर महिला पर एफआईआर

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। डोर-टू-डोर कूड़ा उठाने के कार्य को बाधित करने पर ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के स्वास्थ्य विभाग द्वारा एक महिला के खिलाफ थाना बीटा-2 में मुकदमा दर्ज कराया गया है।

ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के स्वास्थ्य विभाग में सेक्टर में स्थित इंस्पेक्टर के रूप में कार्यरत राकेश कुमार ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि प्राधिकरण द्वारा घरों से डोर-टू-डोर कूड़ा उठाने का कार्य ब्लू प्लेनेट कंपनी को दिया गया है। कंपनी के द्वारा सेक्टर अल्फा दो में दो टाटा एसीसी गाड़ी कूड़ा उठाने के लिए लगाई गई है। प्रत्येक गाड़ी पर एक ड्राइवर और कूड़ा उठाने के लिए एक हेल्पर को तैनात किया गया है। राकेश कुमार के मुताबिक अल्फा-2 सेक्टर के आई ब्लॉक में रहने वाली सविता शर्मा द्वारा पिछले कुछ दिनों से लगातार कूड़ा उठाने के कार्य को बाधित किया जा रहा है। सविता शर्मा यह कहकर गाड़ी सेक्टर में आने से रोक देती है कि प्रत्येक गाड़ी पर दो हेल्पर होने चाहिए। पूर्व में कूड़े पर तैनात कर्मचारियों ने प्राधिकरण अधिकारियों को सविता शर्मा द्वारा रोके जाने पर फोन कर जानकारी दी। इसके बाद अधिकारियों ने सविता शर्मा को मौके पर आकर समझाया। उसके बावजूद भी उनके कार्य प्रणाली नहीं बदली। आए दिन सविता शर्मा द्वारा सेक्टर में कूड़ा गाड़ी को रोका गया और डोर टू डोर कार्य नहीं (शेष पृष्ठ-4 पर)

युवा जोश

सही मायनों में, दिग्गज क्रिकेटरों की अनुपस्थिति में युवा भारतीय क्रिकेटरों ने इंग्लैंड की धरती पर नया इतिहास रचा है। ओवल टेस्ट में उन्होंने इंग्लैंड के मुंह से जीत छीन ली। जो मैच इंग्लैंड के पाले में जाता दिख रहा था, उसे अपनी जीत में बदल दिया। लगातार रोमांचक होते मैच को जीतकर टीम ने न केवल मैच जीता बल्कि शृंखला को भी दो-दो से बराबरी पर ला खड़ा किया। युवा तुर्कों ने उन तमाम क्रिकेट पंडितों की भविष्यवाणियों को बेकार साबित किया, जो इंग्लैंड टीम द्वारा शृंखला जीतने के दावे कर रहे थे। ओवल टेस्ट के अंतिम क्षणों में मोहम्मद सिराज ने तो मैच का पासा ही पलट दिया। मैच के रोमांच ने बताया कि क्यों क्रिकेट पंडित टेस्ट क्रिकेट को असली क्रिकेट की संज्ञा देते हैं। भारत के धुरंधर क्रिकेटरों के बिना इंग्लैंड के खिलाफ उतरी इस टीम ने कई इतिहास रचे, कई रिकॉर्ड तोड़े और नये रिकॉर्ड बनाए। भारतीय क्रिकेट के पिछले 93 साल के इतिहास में यह पहली बार हुआ कि किसी शृंखला में पांच भारतीय बल्लेबाजों ने चार सौ से अधिक रन बनाए हों। यह उपलब्धि इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाती है कि भारतीय खिलाड़ियों ने ये रन तेज गति व उछाल लेती पिचों के बीच बनाये। उन्होंने पूरे दमखम के साथ तेज ब्रिटिश गेंदबाजों का मुकाबला किया। दरअसल, लीड्स व लॉर्ड्स के मैच भारतीय टीम को करीबी मुकाबले में खोने पड़े अन्यथा टीम शृंखला भी जीत सकती थी। कप्तान शुभमन गिल की इसलिए भी तारीफ करनी होगी कि उन्होंने विदेशी पिच पर कप्तानी के दबाव के बीच भरपूर व सर्वाधिक रन बनाये। कई रिकॉर्ड्स उनकी सफल कप्तानी के गवाह हैं। मोहम्मद सिराज ने निर्णायक भूमिका निभाते हुए न केवल अंतिम कीमती विकट लिए बल्कि पूरे मैच में नौ विकेट लेने के कारण 'मैन ऑफ द मैच' भी बने। वहीं प्रसिद्ध कृष्णा ने भी दोनों पारियों में चार-चार विकेट लेकर अपने नाम के अनुरूप प्रसिद्धि हासिल की। ओवल मैच में यशस्वी जायसवाल,आकाशदीप, रवींद्र जडेजा और वॉशिंगटन के बल्लों से निकले रन भी इस जीत में खूब काम आए।सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भारतीय टीम ने यह भी साबित किया कि वह विदेशी धरती में, विषम परिस्थितियों में व नामचीन खिलाड़ियों की अनुपस्थिति में जीत की इबारत लिख सकती है। लगता है जूझते हुए आसन्न हार को जीत में बदलने का हुनर भी टीम ने सीख लिया। जीत के जुनून को हर समय महसूस किया गया। संयुक्त रूप से मैन ऑफ द सीरीज बने शुभमन गिल के बल्ले से खूब रन बरसे। वे इस शृंखला में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज भी बने। यदि वे बीस रन और बना पाते तो एक शृंखला में सबसे ज्यादा रन बनाने के सुनील गावस्कर के रिकॉर्ड को तोड़ सकते थे। वहीं शृंखला में मोहम्मद सिराज नये सितारे बनकर उभरे और उन्होंने सिरीज में सबसे ज्यादा 23 विकेट लिए। निस्संदेह, यह रोमाचक शृंखला टेस्ट क्रिकेट के 148 साल के इतिहास में एक बेहतरीन शृंखला रही। पांचों टेस्ट मैचों में भारतीय टीम जीत के लिये जूझती नजर आई। शुभमन गिल कहीं से नहीं लगे कि वे एक नये कप्तान हैं। वे विराट कोहली और रोहित शर्मा के शानदार विकल्प के रूप में सामने आए हैं। भले ही भारत ने छह रन से ओवल टेस्ट जीता हो मगर यह इतिहास में एक बड़ी जीत के रूप में दर्ज की जाएगी। जिसने हाथ से निकलती सीरीज को बराबरी के स्तर पर ला खड़ा किया। वहीं गिल और सिराज के अलावा इस शृंखला में यशस्वी जायसवाल, के.एल. राहुल, ऋषभ पंत,जसप्रीत बुमराह व आकाश दीप जैसे सितारे भी चमके। निस्संदेह, रवींद्र जडेजा पुराने योद्धा हैं। गिल के पास बहुत समय है और उनसे लंबी पारी और विजयी शृंखलाएं खेलने की उम्मीद की जा सकती है। निस्संदेह, उनकी प्रतिभा भारतीय टीम में जीत का जुनून भरेगी। बहरहाल, शानदार उतार-चढ़ाव भरे पांच मैचों के मुकाबलों ने दर्शाया कि धमाकेदार टी-20 क्रिकेट के दौर में टेस्ट क्रिकेट का क्यों महत्व है। ये उन क्रिकेट पंडितों के लिये जवाब है जो टेस्ट क्रिकेट को बीते दिनों की बात कहने लगे थे।

रामचरित मानस

कल के अंक में आपने पढ़ा था किउनके नीलकमल और गंभीर (जल से भरे हुए) मेघ के समान श्याम शरीर में करोड़ों कामदेवों की शोभा है। लाल-लाल चरण कमलों के नखों की (शुभ्र) ज्योति ऐसी मालूम होती है जैसे (लाल) कमल के पत्तों पर मोती स्थिर हो गए हों॥ उससे आगे का वर्णन क्रमानुसार प्रस्तुत है।

रेख कुलिस ध्वज अंकुस सोहे। नूपुर धुनि सुनि मुनि मन मोहे॥
कटि किंकिनी उदर त्रय रेखा। नाभि गभीर जान जेहिं देखा॥

(चरणतलों में) वज्र, ध्वजा और अंकुश के चिह्न शोभित हैं। नूपुर (पेंजनी) की ध्वनि सुनकर मुनियों का भी मन मोहित हो जाता है। कमर में करधनी और पेट पर तीन रेखाएँ (त्रिवली) हैं। नाभि की गंभीरता को तो वही जानते हैं, जिन्होंने उसे देखा है॥

भुज बिसाल भूषन जुत भूरी। हियँ हरि नख अति सोभा रूरी॥
उर मनिहार पदिक की सोभा। बिप्र चरन देखत मन लोभा॥

बहुत से आभूषणों से सुशोभित विशाल भुजाएँ हैं। हृदय पर बाघ के नख की बहुत ही निराली छटा है। छाती पर रत्नों से युक्त मणियों के हार की शोभा और ब्राह्मण (भृगु) के चरण चिह्न को देखते ही मन लुभा जाता है॥

कंबु कंठ अति चिबुक सुहाई। आनन अमित मदन छबि छाई॥
दुइ दुइ दसन अधर अरुनारे। नासा तिलक को बरनै पारे॥

कंठ शंख के समान (उतार-चढ़ाव वाला, तीन रेखाओं से सुशोभित) है और ठोड़ी बहुत ही सुंदर है। मुख पर असंख्य कामदेवों की छटा छा रही है। दो-दो सुंदर दँतुलियाँ हैं, लाल-लाल होठ हैं। नासिका और तिलक (के सौंदर्य) का तो वर्णन ही कौन कर सकता है॥

(क्रमश:...)

भारत और न्यूज़ीलैंड के बीच हो गयी नई शुरुआत

भारत और न्यूज़ीलैंड के बीच गहराते रक्षा संबंध न केवल द्विपक्षीय सहयोग की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि यह हिंद-प्रशांत क्षेत्र की उभरती भू-राजनीतिक चुनौतियों के संदर्भ में भी सामरिक दृष्टि से अत्यंत प्रासंगिक हैं। देखा जाये तो आज की वैश्विक व्यवस्था में, समुद्री सुरक्षा, आपदा प्रबंधन, साइबर खतरों और बहुपक्षीय सहयोग जैसे मुद्दों पर साझेदारी का महत्व निरंतर बढ़ता जा रहा है। न्यूज़ीलैंड भले ही भौगोलिक रूप से भारत से दूर हो, परंतु दोनों देशों के साझा लोकतांत्रिक मूल्य, मुक्त और नियम-आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के प्रति प्रतिबद्धता उन्हें स्वाभाविक रणनीतिक साझेदार बनाते हैं। हिंद-प्रशांत क्षेत्र, जो आज वैश्विक शक्ति संघर्ष का केंद्र बन चुका है, उसमें भारत की भूमिका एक प्रमुख स्थिर कारक के रूप में उभर रही है। वहीं, न्यूजीलैंड अपनी शांतिपूर्ण, सहयोगात्मक नीति और समुद्री सुरक्षा में सक्रियता के कारण एक विश्वसनीय साझेदार है। इस क्षेत्र में शांति और स्थिरता बनाए रखने के लिए दोनों देशों के बीच समन्वय अत्यंत महत्वपूर्ण है।

हम आपको बता दें कि भारत और न्यूज़ीलैंड के बीच हुई प्रथम रक्षा रणनीतिक वार्ता (Defence Strategic Dialogue) इस बढ़ते सामरिक सहयोग का एक स्पष्ट संकेत है। प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण, समुद्री सूचना साझा करना और बहुपक्षीय सहयोग के क्षेत्र में बातचीत ने द्विपक्षीय रक्षा संबंधों को नई गति प्रदान की है। अत: यह कहा जा सकता है कि भारत और न्यूजीलैंड के बीच रक्षा सहयोग केवल रणनीतिक साझेदारी तक सीमित नहीं है, बल्कि यह क्षेत्रीय स्थिरता, वैश्विक सामंजस्य और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा की दिशा में एक दूरदर्शी कदम है। भविष्य में यह सहयोग दोनों देशों के लिए सामरिक संतुलन और वैश्विक नेतृत्व के अवसरों को और सुदृढ़ कर सकता है।

हम आपको बता दें कि 05 अगस्त, 2025 को नई दिल्ली में भारत-न्यूज़ीलैंड रक्षा रणनीतिक वार्ता का पहला संस्करण आयोजित किया गया। यह न केवल दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग को गहराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल थी, बल्कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में उभरती सुरक्षा चुनौतियों के संदर्भ में एक नए रणनीतिक तालमेल की शुरुआत भी मानी जा सकती है। इस संवाद की सह-अध्यक्षता भारत के रक्षा मंत्रालय में संयुक्त सचिव (अंतरराष्ट्रीय सहयोग) अमिताभ प्रसाद और न्यूजीलैंड रक्षा मंत्रालय की अंतरराष्ट्रीय शाखा की प्रमुख मिस कैथलीन पियर्स ने की। वार्ता के दौरान दोनों पक्षों ने प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण में सहयोग बढ़ाने, समुद्री सुरक्षा और रक्षा उद्योग में साझेदारी को सशक्त करने, बहुपक्षीय सहयोग के क्षेत्रों का विस्तार करने, ग्लोबल कॉमन्स (जैसे कि समुद्री क्षेत्र, साइबर स्पेस आदि) से संबंधित मुद्दों पर सामंजस्य बढ़ाने और White Shipping Information E&change के माध्यम से सूचना साझा करने की प्रक्रिया को और मजबूत करने पर चर्चा की।

इसके अलावा, भारत ने न्यूजीलैंड की CTF-150 (Combined Task Force-150) की सफल कमान संभालने के लिए सराहना की, जिसमें भारतीय नौसेना के पाँच जवान भी स्टाफ के रूप में तैनात थे। यह तथ्य दोनों देशों के बीच अंतर-संचालन और विश्वास का प्रतीक है। हम आपको याद दिला दें कि मार्च 2025 में दोनों देशों के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुए थे, जिसके अंतर्गत यह संवाद स्थापित किया गया। इस MoU ने दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग को औपचारिक और संस्थागत रूप प्रदान किया है। देखा जाये तो यह वार्ता सिर्फ एक द्विपक्षीय चर्चा नहीं थी, बल्कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में नवीन शक्ति संतुलन और साझी रणनीतियों के निर्माण की प्रक्रिया का हिस्सा है। भारत और न्यूज़ीलैंड दोनों ही लोकतांत्रिक मूल्य, खुले समुद्री मार्गों की सुरक्षा, और कानून आधारित वैश्विक व्यवस्था में विश्वास रखते हैं।

भारत और न्यूज़ीलैंड के बीच हुई प्रथम रक्षा रणनीतिक वार्ता इस बढ़ते सामरिक सहयोग का एक स्पष्ट संकेत है। प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण, समुद्री सूचना साझा करना और बहुपक्षीय सहयोग के क्षेत्र में बातचीत ने द्विपक्षीय रक्षा संबंधों को नई गति प्रदान की है।

हम आपको बता दें कि भारत और न्यूज़ीलैंड के बीच रक्षा सहयोग की औपचारिक शुरुआत 2016 में हुई थी, जब दोनों देशों के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुए थे। इसके अंतर्गत यह संवाद स्थापित किया गया। इस MoU ने दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग को औपचारिक और संस्थागत रूप प्रदान किया है। देखा जाये तो यह वार्ता सिर्फ एक द्विपक्षीय चर्चा नहीं थी, बल्कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में नवीन शक्ति संतुलन और साझी रणनीतियों के निर्माण की प्रक्रिया का हिस्सा है। भारत और न्यूज़ीलैंड दोनों ही लोकतांत्रिक मूल्य, खुले समुद्री मार्गों की सुरक्षा, और कानून आधारित वैश्विक व्यवस्था में विश्वास रखते हैं।

हम आपको बता दें कि राजनयिक और रक्षा सहयोग के साथ-साथ दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक, शैक्षणिक और खेल—विशेषकर क्रिकेट—के माध्यम से भी मजबूत संबंध हैं। अगस्त 2024 में भारत के राष्ट्रपति की न्यूजीलैंड यात्रा और मार्च 2025 में दोनों प्रधानमंत्रियों की बैठक ने द्विपक्षीय रिश्तों को नई ऊँचाई दी है।

बहरहाल, भारत-न्यूज़ीलैंड रक्षा रणनीतिक संवाद एक ऐसा मंच बनकर उभरा है, जो केवल सुरक्षा सहयोग तक सीमित नहीं है, बल्कि वैश्विक नेतृत्व, क्षेत्रीय स्थिरता, और रणनीतिक लचीलापन की दिशा में भी मील का पत्थर सिद्ध हो सकता है। यह संवाद दोनों देशों की साझा आकांक्षाओं, लोकतांत्रिक मूल्यों और वैश्विक जिम्मेदारियों का प्रमाण है।

-नीरज कुमार दुबे

डिजिटल युग में संस्कृति से जुड़ाव की प्रासंगिकता

आज के डिजिटल युग में जब हर व्यक्ति, ब्रांड या सेवा खुद को एक पहचान देना चाहता है, तब लोकप्रियता प्राप्त करने का मार्ग केवल तकनीकी दक्षता या रचनात्मकता तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि वह अब इस बात पर भी निर्भर करता है कि आपका विचार, सेवा या कंटेंट उस क्षेत्र की संस्कृति से कितनी गहराई से जुड़ता है। समाज की सांस्कृतिक पहचान जिसमें उसकी भाषा, परंपराएं, जीवनशैली, त्योहार, रीति-रिवाज और स्थानीय मान्यताएं शामिल हैं, किसी भी विचार की स्वीकार्यता के लिए निर्णायक तत्व होती हैं। यही कारण है कि आज अनेक कंटेंट क्रिएटर, स्टार्टअप, सेवाएं और सामाजिक आंदोलन अपने विचारों को लोगों तक पहुंचाने के लिए उस क्षेत्र की सांस्कृतिक भाषा, प्रतीकों और सोच को अपने कंटेंट में सम्मिलित कर रहे हैं।

एक यूट्यूबर जो अपनी स्थानीय बोली में वीडियो बनाता है, या एक सामाजिक कार्यकर्ता जो प्रचार सामग्री में लोककला और परंपरागत प्रतीकों का उपयोग करता है, वह अधिक प्रभावी सिद्ध होता है, क्योंकि वह जनता से आत्मिक जुड़ाव स्थापित करता है। केवल विचार का अच्छा होना पर्याप्त नहीं, वह विचार उस समुदाय की सामूहिक चेतना से मेल खाता है या नहीं, यही उसकी सफलता का मूल आधार बनता है। भारत जैसे सांस्कृतिक विविधता वाले देश में, क्षेत्रीय भाषाएं, पहनावे और मूल्य अलग-अलग होते हैं, और यही कारण है कि जो सेवाएं, ब्रांड या विचार इन विविधताओं को सम्मान देते हुए आगे बढ़ते हैं, उन्हें ही समाज का व्यापक समर्थन प्राप्त होता है। वैश्विक कंपनियां भी आज 'लोकलाइजेशन' की रणनीति अपना रही हैं, वे केवल अंग्रेजी में नहीं, बल्कि हिंदी, तमिल, मराठी, पंजाबी, डोगरी, मैथिली जैसी भाषाओं में विज्ञापन बना रही हैं, स्थानीय त्योहारों पर विशेष छूट दे रही हैं, और सोशल मीडिया पर स्थानीय जन-भावनाओं से मेल खाने वाला कंटेंट प्रकाशित कर रही हैं। जैसे ही कोई विचार या सेवा 'हमारी भाषा में', 'हमारे पर्वों के साथ', 'हमारी जीवनशैली को ध्यान में रखकर' प्रस्तुत होती है, तो लोग उसे केवल जानकारी या सुविधा के रूप में नहीं देखते, बल्कि वह उनकी अपनी चीज बन जाती है। इसी तरह, डिजिटल कंटेंट का क्षेत्र भी तेजी से 'हाइपर लोकल' हो रहा है। चाहे वह इंस्टाग्राम रील्स हो, यूट्यूब शॉर्ट्स या फेसबुक पोस्ट, वह कंटेंट जो स्थानीय जीवन से मेल खाता है, लोगों को अपनी रोजमर्रा की कहानियों से जोड़ता है, वह तुरंत वायरल हो जाता है। इसका उदाहरण हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड और छत्तीसगढ़ के लोक कलाकारों द्वारा तैयार की गई पारंपरिक धुनों पर आधारित शॉर्ट वीडियो हैं, जिन्हें लाखों लोग देखते हैं, क्योंकि उनमें 'अपनापन' है। जब कोई व्यक्ति किसी क्षेत्रीय मेले के रंगों, वहां के खानपान, लोकगीत या कहावतों को अपने कंटेंट में पिरोता है, तो वह केवल मनोरंजन नहीं करता, बल्कि सांस्कृतिक दस्तावेजीकरण का कार्य भी करता है।

इसके अलावा, कंटेंट में स्थानीय व्यंजन, बोली, पहनावा और रीति-रिवाजों का समावेश न केवल लोकप्रियता बढ़ाता है, बल्कि सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण का कार्य भी करता है। सामाजिक अभियानों के लिए भी यह सामंजस्य अत्यंत आवश्यक है। उदाहरणस्वरूप, 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' जैसे अभियान तब सफल हुए जब उन्होंने स्थानीय स्कूलों, पंचायतों और लोकनायकों को माध्यम बनाकर लोगों तक पहुंच बनाई। इसी प्रकार, जल जीवन मिशन, डिजिटल साक्षरता अभियान, स्वच्छता अभियान जैसे प्रयास तब अधिक सफल हुए, जब उन्होंने स्थानीय नायकों और सांस्कृतिक प्रतीकों को अपनी योजनाओं में शामिल किया। सामाजिक स्वीकृति का आधार भी यही है कि विचार को 'हमारा' समझा जाए, न कि ऊपर से थोपा हुआ। यही कारण है कि विज्ञापन से लेकर नीति-निर्माण तक, हर क्षेत्र में अब सांस्कृतिक जुड़ाव को प्राथमिकता दी जा रही है। यह केवल मार्केटिंग की रणनीति नहीं, बल्कि सामाजिक प्रभाव की अनिवार्यता बन चुकी है। यही कारण है कि जब कोई शिक्षक अपने छात्रों को उनकी बोली में समझाता है, तो वह अधिक प्रभावी बनता है। जब कोई हेल्थकेयर वर्कर किसी ग्रामीण महिला को उसकी सांस्कृतिक मान्यताओं के अनुरूप स्वास्थ्य परामर्श देता है, तो वह अधिक विश्वसनीय माना जाता है। आज के दौर में 'सोशल इन्फ्लुएंसर' बनने का मार्ग केवल तकनीक या मनोरंजन तक सीमित नहीं, बल्कि संस्कृति की गहराइयों से जुड़कर ही उसका दीर्घकालिक प्रभाव संभव है। उदाहरणस्वरूप, एक कंटेंट निर्माता जो उत्तर भारत में रहता है, यदि वह अपनी बात को ब्रज, अवधी या कुमाऊंनी जैसी स्थानीय बोलियों में प्रस्तुत करता है, और साथ ही लोकगाथाओं, देवी-देवताओं, क्षेत्रीय व्यंजनों या मेलों का संदर्भ देता है, तो वह शहरी और ग्रामीण दोनों दर्शकों से सहजता से जुड़ता है। हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले का आयुष ठाकुर कलाकार स्थानीय भाषा में कॉमेडी करता है और लाखों फॉलोअर्स उसके कंटेंट्स को पसंद करते हैं। बिलासपुर का 'हिमाचली मुंडा' भी अपनी ग्रामीण परिवेश की जटिल व्यवस्था को स्थानीय भाषा में जनमानस तक पहुंचाने का सजग प्रयास करता है और लोगों में अत्यधिक लोकप्रिय है। मध्यप्रदेश के एक यूट्यूबर ने 'मालवी व्यंग्य' की शैली में शॉर्ट वीडियो बनाए, उसके लाखों फॉलोअर्स केवल उसकी प्रस्तुति से नहीं, बल्कि उसकी क्षेत्रीय अभिव्यक्ति से जुड़ गए।

इसी तरह छत्तीसगढ़ में एक निजी संस्था ने शिक्षा को आदिवासी बच्चों तक पहुंचाने के लिए गोंडी में ऑडियो कहानियां तैयार कीं, जिससे बच्चों में शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ी। इस जुड़ाव का महत्व कॉर्पोरेट ब्रांड भी समझने लगे हैं, वे अब अपनी पैकेजिंग में क्षेत्रीय चित्रांकन, वाणी और लोकनायकों की छवि प्रस्तुत कर रहे हैं। 'लोकल ही ग्लोबल है' का विचार अब नारा मात्र नहीं, बल्कि व्यापार और सामाजिक प्रभाव का मार्ग बन चुका है। जनमानस की सामूहिक स्मृति में जो बातें घर कर जाती हैं, वे केवल सूचना नहीं होतीं, बल्कि अनुभव बनती हैं और वह अनुभव संस्कृति से जुड़ा होता है। संस्कृति और नवाचार यदि साथ चलें, तो वह समाज में परिवर्तन और सेवा का स्थायी स्वरूप बनाते हैं। एक डिजिटल ऐप जो किसानों को मौसम की जानकारी देता है, यदि वह उनके त्योहारों, कृषि चक्र और बोली को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया हो, तो वह केवल तकनीक नहीं, एक सामाजिक साथी बन जाता है। इसी प्रकार, शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापन स्थानीय कहावतों, उदाहरणों और खेलों से हो।

-कर्म सिंह ठाकुर
स्वतंत्र लेखक

राशिफल

श्रावण माह, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी — **(विक्रम संवत् 2082)**

मेष- (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)
भाग्यवश कुछ काम बनेंगे। कार्यों की विघ्न बाधा खत्म होगी। यात्रा का योग बनेगा। स्वास्थ्य, प्रेम, व्यापार अच्छा रहेगा।

वृष- (ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे , वो)
एक दिन और परिस्थितियां प्रतिकूल हैं। थोड़ा बच के पार रखिए और कोई भी महत्वपूर्ण कार्य अभी रोक के रखिए।

मिथुन- (का, की, कु, घ, ड , छ, के, हो, हा)
आनंददायक जीवन गुजारेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। जीवनसाथी का साथ रहेगा। प्रेम संतान का साथ होगा।

कर्क- (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डा)
स्वास्थ्य थोड़ा ऊपर नीचे रहेगा लेकिन बुजुर्गों का आशीर्वाद बना रहेगा। गुण, ज्ञान की प्राप्ति होगी।

सिंह- (मा, मी, मु, मे, मो, टा, टी, टु, टे)
महत्वपूर्ण निर्णय अभी रोक कर रखें। भावुक बने रहेंगे। स्वास्थ्य पर ध्यान दें। प्रेम, संतान मध्यम।

कन्या- (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)
गृह कलह के संकेत हैं। थोड़ा सा ध्यान देने की आवश्यकता होगी। भूमि भवन वाहन की खरीदारी की संभावना बन रही है।

तुला- (रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, त)
कोई नई व्यापारिक शुरुआत करना चाहते हैं तो शुभ समय है, शुरू कर दें। स्वास्थ्य अच्छा है। प्रेम संतान का साथ है।

वृश्चिक- (तो, ना, नी, नु, ने, नो, या, यी, यू)
मुख रोग के शिकार हो सकते हैं और अगर निवेश किया तो नुकसान भी हो सकता है। प्रेम, व्यापार अच्छा है।

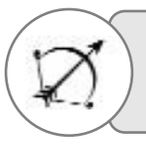

धनु- (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ठा, भे)
एक अलग तेज आप में रहेगा और जरूरत के हिसाब से वस्तुएं जीवन में होंगी। सामाजिक कद बढ़ेगा।

मकर- (भो,जा,जी,जू,जे,जो,खा,खी,खू,खे,गा,गी)
मन चिंतित रहेगा। अज्ञात भय सताएगा। सिर दर्द और नेत्र पीड़ा संभव है। स्वास्थ्य थोड़ा माध्यम है।

कुम्भ- (गू, गे, गो, सा, सी, सु, से, षो, द)
आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। यात्रा का योग बनेगा। बच्चे आगे बढ़ेंगे। प्रेम में नयापन रहेगा।

मीन- (दी, दु, झ, ध, दे, दो, च, चा, चि)
व्यापारिक स्थिति सुदृढ़ होगी। पिता का साथ होगा। कोर्ट कचहरी में विजय मिलेगा। स्वास्थ्य, प्रेम, व्यापार अच्छा होगा।

डीएम की अध्यक्षता में आईआईए की हुई बैठक

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। जिलाधिकारी मेधा रूपम की अध्यक्षता में उद्योग बंधु गोष्ठी का आयोजन किया गया। बैठक में इंडियन इंडस्ट्रीज एसोसिएशन (आईआईए) ग्रेटर नोएडा चैप्टर के प्रतिनिधिमंडल ने भाग लिया और औद्योगिक क्षेत्रों से जुड़े कई अहम मुद्दों को प्रमुखता से उठाया।

गोष्ठी की शुरुआत में डायरेक्टरेट ऑफ इंडस्ट्रीज के उपायुक्त अनिल कुमार ने सभी आगंतुकों का स्वागत करते हुए बैठक का संचालन किया। आईआईए ग्रेटर नोएडा चैप्टर की ओर से चेयरमैन सरबजीत सिंह के नेतृत्व में तीन सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने बैठक में शिरकत की, जिसमें मुकेश गुप्ता एवं नवीन गुप्ता भी शामिल रहे।

आईआईए चेयरमैन ने जिलाधिकारी के समक्ष औद्योगिक विकास में आ रही व्यावहारिक समस्याओं को विस्तार से रखा। उन्होंने विशेष रूप से निम्नलिखित चार मुद्दों पर तत्काल कार्यवाही की मांग की सूरजपुर डीएससी रोड की जर्जर स्थिति, बरसात के चलते यह मार्ग अत्यंत खतरनाक हो गया है, जिससे दुर्घटनाओं की आशंका बढ़ गई है। प्रतिनिधिमंडल ने इसके पुनर्निर्माण कार्य में शीघ्रता लाने की मांग की।

सड़कों, पार्कों और सरकारी जमीनों पर अवैध कब्जों को हटाने की आवश्यकता जताई गई ताकि मूलभूत संरचनाएं सुरक्षित रहें और यातायात बाधित न हो।

प्रतिनिधिमंडल ने ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण को निर्देश देने की मांग की कि संबंधित उद्यमी को लीज डीड पूरी कर वैध रूप से प्लॉट पर कब्जा सौंपा जाए।

उद्योग बंधु गोष्ठियों के माध्यम से प्रशासन और उद्योगजगत के बीच संवाद की इस कड़ी को उद्योग प्रतिनिधियों ने बेहद उपयोगी बताया और विश्वास जताया कि समस्याओं के समाधान से जिले का औद्योगिक परिदृश्य और अधिक सशक्त होगा।

तिरंगा यात्रा को लेकर भाजपा की हुई बैठक

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत 'हर घर तिरंगा' अभियान को जन आंदोलन बनाने हेतु जिला भाजपा कार्यालय, तिलपता पर आज एक व्यापक कार्ययोजना बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में जिले के मंडल प्रभारी, मंडल अध्यक्ष, मोर्चा एवं प्रकोष्ठों के पदाधिकारी बड़ी संख्या में शामिल हुए।

बैठक की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष अभिषेक शर्मा ने की, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा के जिला प्रभारी प्रमोद गुप्ता उपस्थित रहे। कार्ययोजना बैठक का संचालन जिला महामंत्री धर्मेंद्र कोरी ने किया।

बैठक को संबोधित करते हुए जिला प्रभारी प्रमोद गुप्ता ने कहा कि राष्ट्रध्वज तिरंगा, सिर्फ एक झंडा नहीं बल्कि हमारी अस्मिता, सम्मान और बलिदानों की गाथा का प्रतीक है। यह अभियान हर परिवार, हर नागरिक के दिल तक पहुँचना चाहिए।

उन्होंने बताया कि 12 अगस्त तक सभी मंडलों में तिरंगा यात्राएं निकाली जाएंगी। इस यात्रा में राष्ट्रीय, प्रांतीय, ज़िला, मंडल एवं बूथ स्तर तक के कार्यकर्ता भाग लेंगे, ताकि अधिक से अधिक आमजन को जोड़ा जा सके। उन्होंने विशेष रूप से बच्चों की भागीदारी पर ज़ोर देते हुए कहा कि बच्चे अपने अभिभावकों के साथ मिलकर अपने घरों पर तिरंगा फहराएं।

जिलाध्यक्ष अभिषेक शर्मा ने अभियान की विस्तृत रूपरेखा साझा करते हुए बताया कि 7 और 8 अगस्त को सभी मंडलों पर कार्ययोजना बैठकें होंगी। 10, 11 और 12 अगस्त को मंडलों में भव्य तिरंगा यात्राएं आयोजित की जाएंगी। 12, 13 और 14 अगस्त को शहीद स्मारकों पर स्वच्छता अभियान चलाकर, स्मृति स्थलों पर माल्यार्पण किया जाएगा। इन्हीं तिथियों में हर घर तक तिरंगा पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है।

14 अगस्त को भाजपा जिला कार्यालय पर 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' के तहत गोष्ठी, मौन जुलूस और प्रदर्शनी का आयोजन किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि भाजपा की संगठनात्मक क्षमता और कार्यकर्ताओं की समर्पित भागीदारी से यह अभियान केवल पार्टी तक सीमित न रहकर, हर घर, हर परिवार और हर नागरिक तक पहुंचेगा, जिससे राष्ट्रभक्ति और एकता का सशक्त संदेश जाएगा।

इस अवसर पर सुभाष भाटी, सतेंद्र अवाना, मनोज गर्ग, देवा भाटी, सतेंद्र नागर, पवन नागर, कर्मवीर आर्य (मीडिया प्रभारी), वीरेंद्र भाटी, युवा मोर्चा अध्यक्ष राज नागर, रजनी तोमर, संजय चेची, अमित पंडित, सत्यपाल शर्मा, विकास चौधरी, गुरुदेव भाटी, इंद्र नागर, रवि जिंदल, इंद्रजीत टाइगर, विजय रावल, सतीश भाटी, ठाकुर धर्मेंद्र भाटी, पंकज रावल, अर्पित तिवारी, राजीव सिंघल, दिनेश भाटी, मुकेश चौहान, महेंद्र नागर, धीर सिंह राणा, सतीश गुलिया, मनोज प्रधान और अनीता गौतम आदि मौजूद रहे।

सरकारी अस्पतालों की कमी पर उठी आवाज़

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। गौतमबुद्धनगर में सरकारी और निजी अस्पतालों के अनुपात में भारी असंतुलन ने एक बार फिर जनस्वास्थ्य व्यवस्था पर बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है। जिले में स्वास्थ्य सेवाओं का बड़ा हिस्सा निजी हाथों में है, जबकि सरकारी अस्पतालों की संख्या नाम मात्र की है। परिणामस्वरूप, समाज का एक बड़ा तबका महंगे निजी अस्पतालों का खर्च वहन करने में पूरी तरह असमर्थ है।

ऐसी स्थिति में जब सरकारी विकल्प सीमित हों और निजी अस्पतालों की दरें आम आदमी की पहुंच से बाहर हों, तब जरूरतमंदों के पास इलाज के सीमित ही नहीं, कई बार शून्य विकल्प बचते हैं। यह एक ऐसा मौन संकट है, जिसे समाज के सबसे कमजोर वर्गों को प्रतिदिन झेलना पड़ रहा है।

इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय यह भी है कि ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने हाल ही में चार बहुमूल्य प्लॉटों को निजी अस्पतालों के लिए बिडिंग के आधार पर देने की योजना घोषित की है। जानकारों का मानना है कि इस प्रक्रिया में ये प्लॉट निजी संस्थाओं द्वारा कई गुना अधिक मूल्य पर खरीदे जाएंगे, और अंततः इसका सीधा असर इलाज की दरों पर पड़ेगा, जो आमजन को ही चुकानी होगी।

जन प्रतिनिधियों और सामाजिक कार्यकर्ताओं की ओर से यह सवाल बार-बार उठाया जा रहा है कि जब पहले से ही निजी अस्पतालों की संख्या सरकारी अस्पतालों से कहीं अधिक है, तो ऐसे बहुमूल्य प्लॉटों का उपयोग सरकारी अस्पतालों के निर्माण के लिए क्यों नहीं किया जा रहा?

कई जानकारों का सुझाव है कि यदि प्राधिकरण स्वयं इन प्लॉटों पर अस्पताल निर्माण कर उन्हें सरकार या जनहितैषी संस्थाओं को संचालन हेतु दे, तो इससे स्वास्थ्य सुविधाएं आम जनता की पहुंच में आ सकेंगी। इसके साथ-साथ यह मॉडल राजस्व सृजन का भी साधन बन सकता है, जिसे आगे नागरिक कल्याण में निवेश किया जा सकता है।

सिविल समाज और जन प्रतिनिधियों ने प्राधिकरण से आग्रह किया है कि इन प्लॉटों को निजी बिडिंग प्रक्रिया से बाहर किया जाए और इनका प्रयोग आमजन के हित में सार्वजनिक स्वास्थ्य ढांचे के विस्तार हेतु किया जाए।

ककराला में बोलती है भू-माफियाओं की तूती

अवैध मकानों पर चलेगा बुल्डोजर

नोएडा (चेतना मंच)। ककराला गांव के डूब क्षेत्र में अवैध रूप से बने मकानों पर नोएडा प्राधिकरण का बुलडोजर शीघ्र चलेगा। ककराला गांव के डूब क्षेत्र में भू-माफियाओं ने अवैध कॉलोनी काटकर सरकार को कई करोड़ रुपये का चूना लगाया है। भोली-भाली जनता को गुमराह कर भू-माफिया जहां मालामाल हो गए, वहीं जनता इनके बुने जाल में फंसकर कंगाली के कगार पर पहुंच गई। अब स्थिति यह है कि डूब क्षेत्र में बने मकानों को नोएडा प्राधिकरण के अधिकारी ध्वस्त करने की रणनीति बना रहे हैं।

ककराला के ही कई भूमाफिया स्थानीय अधिकारियों से साठगांठ कर दूर क्षेत्र में अवैध कॉलोनी काटने का काम कर रहे हैं। इस पूरे प्रकरण की शिकायत कुछ लोगों ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से भी की है। लोगों का कहना है कि ककराला के कुछ भूमाफिया अपनी जेब भरने के लिए भोली-भाली जनता को ठगकर उन्हें कंगाल बनाने का काम कर रहे हैं।

ज्ञानपुर में हर-घर-तिरंगा अभियान के तहत कार्यशाला सम्पन्न

ज्ञानपुर/भदोही। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आयोजित हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत आज भारतीय जनता पार्टी के जिला कार्यालय, ज्ञानपुर में एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजपा जिलाध्यक्ष दीपक मिश्रा ने की, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग के सदस्य व जिला प्रभारी नागेंद्र रघुवंशी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रगान और तिरंगे को नमन के साथ हुई। कार्यशाला में देशभक्ति की भावना, संगठनात्मक जिम्मेदारियों और मतदाता जागरूकता जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत चर्चा हुई।

नागेंद्र रघुवंशी ने कहा कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी भाजपा कार्यकर्ता तिरंगा यात्रा और अन्य देशभक्ति कार्यक्रमों के माध्यम से जनता में राष्ट्रीय एकता का संकल्प जगाएंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निर्णायक नेतृत्व, सेवा और शौर्य के कारण ऑपरेशन सिंदूर की सफलता भारत की सामरिक शक्ति का प्रतीक है। यह विजय उत्सव केवल सैन्य सफलता नहीं, बल्कि देश की आत्मा को गौरव से भर देने वाला क्षण है। उन्होंने आगे कहा कि यह विजय उत्सव हेडक्वार्टर को ध्वस्त करने का नहीं, बल्कि 'सिंदूर की सौगंध' को निभाने और भारत की अखंडता की रक्षा का पर्व है।

रघुवंशी ने कहा कि पार्टी इसे युद्धस्तर पर अभियान की तरह चलाएगी। बूथ स्तर तक गलत नाम हटाना, नए मतदाताओं को जोड़ना और पारदर्शी चुनाव प्रक्रिया सुनिश्चित करना भाजपा का संकल्प है।

जिलाध्यक्ष दीपक मिश्रा ने कहा कि देशभर में जिस प्रकार सकारात्मक माहौल बना है, उसी भावना को जनपद के कार्यकर्ता ज़मीनी स्तर तक ले जाएंगे। 'हर घर तिरंगा' यात्रा में हर कार्यकर्ता अपनी पूरी सहभागिता सुनिश्चित करेगा। इस अवसर पर औराई विधायक दीनानाथ भास्कर ने कार्यशाला के समापन की घोषणा की और कार्यकर्ताओं को स्वतंत्रता दिवस से पूर्व आयोजित अभियानों में सक्रिय भागीदारी की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर नागेंद्र सिंह, रमेश पांडे, संतोष तिवारी, गोवर्धन राय, सुरेंद्र नाथ पांडे, प्रदीप सिंह, सुनील मिश्रा, गोरेलाल पांडे, मनीष पांडेय, अखिलेश सिंह बघेल, चिंटू, स्नेहलता श्रीवास्तव, सपना दुबे, मनीषा एम्बेसडर, सुषमा मालवीय, राजेंद्र पाल बघेल, अखिलेश तिवारी, मोनू शर्मा, दीपम तिवारी, दीपक तिवारी, संजय सरोज, निहाल पासी, पंडित सिंह, शैलेश पांडे, अश्वनी अग्रवाल, कपिल मिश्रा और राजेंद्र दुबे आदि लोग मौजूद रहे।

किसान एकता महासंघ की अधिकारियों से हुई वार्ता

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। किसान एकता महासंघ के कार्यकर्ताओं की मीटिंग यमुना विकास प्राधिकरण के अधिकारियों से राष्ट्रीय संरक्षक चौधरी बाली व राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश कसाना के नेतृत्व में 30 जुलाई को सलारपुर अंडरपास

पर हुई महापंचायत के मुद्दों को लेकर यमुना विकास प्राधिकरण के सभागार में संपन्न हुई।

संगठन के जिला अध्यक्ष अरविंद सेक्रेटरी ने बताया किसानो के 64.7 प्रतिशत अतिरिक्त मुआवजा,आबादी निस्तारण,बैक लीज, 10ल आवासीय प्लॉट, शिक्षा ,चिकित्सा, युवाओं को रोजगार सहित आदि समस्याओं को लेकर 30 जुलाई को सलारपुर अंडरपास पास पर एक महापंचायत का आयोजन किसान एकता महासंघ के बैनर तले किया गया था जिसमें 9 सूत्रीय मांगों का ज्ञापन यमुना प्राधिकरण के अधिकारियों को सोपा गया इसके संबंध में आज यमुना विकास प्राधिकरण के अधिकारियों ने किसानो की समस्याओं को लेकर यमुना विकास प्राधिकरण के सभागार में किसान एकता महासंघ के पदाधिकारी को मीटिंग के लिए यमुना विकास प्राधिकरण बुलाया गया जिसमें सभी मुद्दों को लेकर प्राधिकरण के सभागार में किसानों को मुद्दों के समाधान के लिए करीब ढाई घंटे यमुना विकास प्राधिकरण के सीईओ राकेश कुमार सिंह,ओएसडी शैलेंद्र सिंह,ओएसडी अभिषेक शाही, ओएसडी कृष्ण गोपाल आदि अधिकारियों से वार्ता चली सभी समस्याओं को लेकर प्राधिकरण के अधिकारियों द्वारा जल्द समाधान करने का आश्वासन दिया उक्त सभी समस्याओं को लेकर 9 सूत्रीय मांगों का ज्ञापन यमुना विकास प्राधिकरण के सीईओ राकेश कुमार सिंह को सोपा प्राधिकरण के सीईओ राकेश कुमार ने सभी समस्याओं को समाधान करने लिए अधिकारियों को आदेशित किया।

इस मौके चौधरी बाली सिंह,रमेश कसाना,मास्टर इंद्रपाल, हरवीर नागर, उमेद कसाना, नरेश चपरगढ, संजय कसाना, रवि नागर, अमित नागर, बलराज नागर, श्यामवीर भाटी, राजेंद्र चौहान, जग्गी पहलवान, नीरज नागर, विदेश नागर, प्रभु नागर, रजपाल भगत, गजराज कसाना, हरेंद्र कसाना, जयप्रकाश चौहान, बिरम सिंह, संदीप कसाना, गौरव अंबावता सहित सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

दैनिक चेतना मंच
भगवान हनुमान बजरंग बली के अवतार श्री बालाजी (मेंहदीपुर) के संरक्षण में संचालित किया जाता है। समाचार-पत्र का यह अंक भी उन्हीं के चरणों में समर्पित है।
डाक पंजी. सं. L-10/GBD-574/99
RNI No. 69950/98
स्वामी मुद्रक प्रकाशक रामपाल सिंह रघुवंशी ने M/s Sai Printing Press, डी-85 सेक्टर-6, नोएडा, गौतमबुद्धनगर (यू.पी.) से छपवाकर, ए-131 सेक्टर-83, नोएडा से प्रकाशित किया।
संपादक-रामपाल सिंह रघुवंशी
Contact: 0120-2518100, 4576372, 2518200
Mo.: 9811735566, 8750322340
E-mail: chetnamanch.pr@gmail.com raghuvanshirampal365@gmail.com raghuvanshi_rampal@yahoo.co.in
www.chetnamanch.com

एक्टिव सिटीजन ने विधायक को सौंपा ज्ञापन

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। एक्टिव सिटीजन टीम ने आज नोएडा विधायक पंकज सिंह को ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण द्वारा निजी अस्पतालों के लिए प्लॉट स्कीम को सरकारी अस्पताल में परिवर्तित करने के लिए एक ज्ञापन दिया। ज्ञापन देने वालों में आलोक सिंह, हरेन्द्र भाटी, रमेश चंदानी, आशीष शर्मा आदि लोग मौजूद रहे।

ग्रेटर नौएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण

प्लॉट नं0 – 1 सैक्टर के0पी0–4, ग्रेटर नोएडा सिटी, गौतमबुद्ध नगर – 201308, उ0प्र0
वेबसाइट: www.greaternoidaauthority.in, ई–मेल: authority@gnida.in

पत्रांक: उद्यान/2025/7126 दिनांक: 06.08.2025

ई–निविदा आमंत्रण सूचना

प्रभारी (निविदा सेल), ग्रेटर नोएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण द्वारा मुख्य कार्यपालक अधिकारी, ग्रेटर नोएडा की ओर से ई–निविदा आमंत्रण सूचना संख्या–उद्यान/ 2025/7125, दिनांक 06.08.2025 के माध्यम से उल्लेखित क्रम सं.: 01 में अंकित कार्य की निविदा आमंत्रित की जाती है। ई–निविदा की समस्त नियम व शर्तें ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण की वेबसाइट: **www.greaternoidaauthority.in** पर ई–निविदा लिंक एवं ई–पोर्टल **https://etender.up.nic.in** पर उपलब्ध है। किसी परिवर्तन, संशोधन व अतिरिक्त सूचनाओं के लिए उक्त वेबसाइटें देखते रहें।

क्र. सं.	कार्य का नाम/वर्क सर्किल	अनुमानित लागत
1.	Design engineering development of waste to wonder park (Adbhut Bharat Park) on revenue share modal for 20 years, at D Park, Greater Noida.	Rs. 16.06 Crore

उक्त कार्य की निविदा दिनांक 08.08.2025 से 21.08.2025 को 17:00 बजे तक अपलोड किया जा सकता है तथा प्राप्त ई–निविदाओं की प्री–क्वालिफिकेशन बिड दिनांक 25.08.2025 को 11:00 बजे खोली जायेगी।

वरिष्ठ प्रबंधक (उद्यान)

Follow Us on / OfficialGNIDA

ग्रेटर नौएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण

प्लॉट नं0 – 1 सैक्टर के0पी0–4, ग्रेटर नोएडा सिटी, गौतमबुद्ध नगर – 201308, उ0प्र0
वेबसाइट: www.greaternoidaauthority.in, ई–मेल: authority@gnida.in

पत्रांक: स्वा.वि./2025/1771 दिनांक: 05.08.2025

ई–निविदा आमंत्रण सूचना

प्रभारी वरिष्ठ प्रबन्धक (निविदा सेल) ग्रेटर नोएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण द्वारा मुख्य कार्यपालक अधिकारी, ग्रेटर नोएडा की ओर से ई–निविदा आमंत्रण सूचना संख्या–स्वा.वि./2025/1770, दि. 05.08.2025 के माध्यम से ई–निविदा आमंत्रित की जाती है। ई–निविदा की समस्त नियम व शर्तें ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण की वेबसाइट **www.greaternoidaauthority.in** पर ई–निविदा लिंक एवं ई–पोर्टल **https://etender.up.nic.in** पर उपलब्ध है। किसी परिवर्तन, संशोधन व अतिरिक्त सूचनाओं के लिए उक्त वेबसाइट देखते रहें।

क्र. सं.	कार्य का नाम/वर्क सर्किल	अनुमानित लागत
1.	Request for Proposal (RFP) for Setting up compressed Bio-Gas Plant for Processing of 50 TPD Cow Dung & Other Waste in Nandi Guashala, Powari, Greater Noida.	Rs. 17.00 Crore

उक्त कार्य की निविदा दिनांक 08.08.2025 से 29.08.2025 को 17:00 बजे तक अपलोड किया जा सकता है। उपरोक्त निविदा में प्रतिभाग करने वाली फर्मों/एजेन्सियों की प्री–बिड मीटिंग (Pre-Bid Meeting) दिनांक 19.08.2025 को दोपहर 03:00 बजे ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण कार्यालय, भूखण्ड सं.–01, सैक्टर–नॉलेजपार्क–4, ग्रेटर नोएडा के प्रशासनिक भवन में चतुर्थ तल पर आहूत की गयी है। उक्त कार्य की ई–निविदा की प्री–क्वालिफिकेशन बिड दिनांक 02.09.2025 को 11:00 बजे खोली जायेगी।

वरिष्ठ प्रबंधक (स्वास्थ्य)

Follow Us on / OfficialGNIDA

सड़क हादसों में तीन लोगों की मौत

नोएडा (चेतना मंच)। सड़क हादसों में तीन लोगों की मौत के मामले में परिजनों ने संबंधित थानों में मुकदमा दर्ज कराया है। इनमें से दो मुकदमे न्यायालय के निर्देश पर दर्ज किए गए हैं।

झारखंड निवासी इंद्रदेव शर्मा ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि उनका (16 वर्षीय) बेटा अनुज शर्मा रायपुर खादर गांव में रहता था। 25 जून को वह बाइक से अपने कमरे की तरफ आ रहा था। लोट्स वैल्यू सोसाइटी के पास तेज गति में आ रही कार ने उसकी बाइक में टक्कर मार दी। इस हादसे में अनुज शर्मा गंभीर रूप से घायल हो गया। उपचार के लिए उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया। 27 जून को उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। पोस्टमार्टम होने के बाद वह अपने बेटे के शव को झारखंड लेकर चला गया। अंतिम संस्कार एवं शोक कार्यों के चलते वह नोएडा नहीं आ पाया था। पीड़ित की शिकायत पर थाना सेक्टर-126 पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है।

थाना बीटा-2 में झांसी निवासी बालेंदु ने अपने बेटे के दुर्घटना में मृत्यु होने की रिपोर्ट दर्ज कराई है। पीड़ित ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि 6 मार्च की देर रात्रि को उनका बेटा ध्रुव अपने दोस्त शिवम आर्य अभय के साथ कार से सेक्टर अल्फा दो की तरफ जा रहा था। कार को शिवम उर्फ अभिनव चल रहा था। तेज रफ्तार में कार दौड़ा रहा शिवम उर्फ अभिनव चूहड़पुर अंडरपास में नियंत्रण खो बैठा और गाड़ी अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई। इस हादसे में कार सवार सभी लोगों को गंभीर चोटें आई। बालेंदु के मुताबिक उनके बेटे ध्रुव की मौके पर ही मौत हो गई थी। उन्होंने आरोप लगाया कि शिवम उर्फ अभिनव की लापरवाही से यह हादसा हुआ था।

थाना बीटा-2 में ही न्यायालय के निर्देश पर सड़क हादसे का एक और मामला दर्ज हुआ है। जनपद बुलंदशहर निवासी रवि ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि उनका बेटा बिट्टू (15 वर्ष) अपने दादा राजवीर व दादी फूलवती के पास सेक्टर पी-4 में रहता था। 7 फरवरी की सुबह प्रदीप व सुनील उनके बेटे बिट्टू को बाइक पर बैठ कर ले गए। जनता फ्लैट के सामने बाइक डिवाइडर से टकराकर हादसे का शिकार हो गई। इस हादसे में तीनों युवकों को चोटें आई। रवि के मुताबिक उपचार के दौरान दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में उनके बेटे की मृत्यु हो गई। पीड़ितों की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया गया है। दोनों मामले न्यायालय के निर्देश पर दर्ज किए गए हैं।

रोड किनारे कूड़ा डालने पर दो वाहन जब्त, एक लाख रुपए जुर्माना

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के स्वास्थ्य विभाग की तरफ से गठित क्यूआरटी (क्विक रेस्पोंस टीम) ने कार्रवाई शुरू कर दी है। टीम ने बुधवार को सेक्टर चाई-फाई के पास 80 मीटर रोड के किनारे कूड़ा डालते हुए एक ट्रैक्टर- ट्राली को पकड़ लिया। उसे जब्त करते हुए 50 हजार रुपए का जुर्माना लगाया गया है। ट्रैक्टर-ट्राली के मालिक के द्वारा भुगतान किए जाने पर ही छोड़ा जाएगा। दूसरी कार्रवाई सेक्टर जू-3 में की गई। रोड किनारे कूड़ा डालते हुए एक टिपर को पकड़ा गया। इसे भी जब्त करते हुए 50 हजार रुपए का जुर्माना लगाया गया। प्राधिकरण के महाप्रबंधक स्वास्थ्य आरके भारती ने बताया कि क्यूआरटी की टीम फील्ड में घूम रही है। कोई भी इधर-उधर कूड़ा डालते हुए पकड़ा गया तो उस पर तगड़ा जुर्माना लगाया जाएगा। किसी को बख्शा नहीं जाएगा। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण की एसीईओ श्रीलक्ष्मी वीएस ने जनमानस से अपील की है कि ग्रेटर नोएडा को स्वच्छ बनाने में सहयोग करें। कूड़ा इधर-उधर न फेंकें , सिर्फ डस्टबिन में ही कूड़ा डालें।

मियावाकी पद्धति से पौधरोपण, तीन साल में दिखेगा अलग ही नजारा

ग्रेनो प्राधिकरण की पहल पर सेक्टर 10 में हुआ पौधरोपण

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। ग्रेटर नोएडा के सैनी गांव के निकट सेक्टर 10 में मियावाकी पद्धति से पौधरोपण किया गया। बतौर मुख्य अतिथि ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण की एसीईओ श्रीलक्ष्मी वीएस और कैच फाउंडेशन व कोवेस्ट्रो इंडिया के प्रतिनिधियों ने पौधे लगाए। अगले तीन साल बडे हो जाने पर इन पौधों की रंगत दिखेगी। 130 मीटर रोड के किनारे स्थित करीब दो एकड़ एरिया में बनी यह ग्रीन बेल्ट माउंटेन के आकार में दिखेगी। इसमें लगभग 15 हजार पौधे लगाए गए हैं।

ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के डीजीएम संजय कुमार जैन ने बताया कि मियावाकी पद्धति के अंतर्गत इस ग्रीन बेल्ट में तीन लेयर, जैसे केनोपी लेयर, ट्री लेयर और सब ट्री लेयर में पौधरोपण किया गया है। केनोपी

लेयर में नीम, शीशम, बरगद, करंज, आम, पारस पीपल, कचनार, पीपल आदि प्रजाति के पौधे लगाए गए हैं। ट्री लेयर में महोगनी, कैथल, आमला, बेल, जामुन, इमली, अर्जुन, अमलतास, पिलखन, गुलमोहर आदि प्रजाति के पौधे लगाए गए हैं और सब ट्री लेयर में जामफल, कड़ी पत्ता, सीताफल, नींबू, करौंदा, बंबू, टिकोमा, पारिजात के पौधे लगाए गए हैं।

इन पौधों को सुरक्षित रखने के लिए जालीदार बाउंड्री बना दी गई है। पेड़ों की सिंचाई के लिए ड्रिप पद्धति का इस्तेमाल किया गया है। इसके अंतर्गत पौधों की कतार के बीच से पाइप डाली गई है। उनमें बने छिद्र से पानी का रिसाव होकर पौधों की जड़ों तक पहुंचता रहेगा। इस पद्धति से पानी की खपत भी कम होती है। सहायक निदेशक उद्यान बुद्ध विलास ने बताया कि मियावाकी पद्धति के अंतर्गत फलदार पौधे रोपित किए गए हैं। बायो-डायवर्सिटी के लिए ये बहुत अच्छे हैं। कार्बन डाई ऑक्साइड को शोषित करने में ये बहुत कारगर हैं। पौधरोपण के दौरान ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के उप निदेशक नथोली सिंह, प्रबंधक मिथलेश कुमार, कैच फाउंडेशन व कोवेस्ट्रो इंडिया की तरफ से भरत सिसोदिया, अंकिता शाह व अन्य मौजूद रहे। मियावाकी पद्धति से पौधरोपण, तीन साल में दिखेगा अलग ही नजारा।

एटीएम से पैसे निकालने गए युवक को लगाया चूना

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। हबीबपुर गांव में एटीएम से पैसे निकालने गए एक व्यक्ति को 33 हजार रुपए का चूना लग गया। मशीन में एटीएम कार्ड व पिन डालने के बाद भी युवक के पैसे नहीं निकले लेकिन उसके खाते से पैसे निकल गए। हबीबपुर गांव में रहने वाले अजीत कुमार ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि वह 28 मई को एटीएम बूथ से पैसे निकालने के लिए गया था। उसने मशीन में अपना एटीएम कार्ड डालकर पिन नंबर डाला लेकिन मशीन से पैसे नहीं निकले। इसके बाद वह घर लौट आया। कुछ समय बाद उसे बैंक से मैसेज मिला कि उसके खाते से 33 हजार रुपए निकले हैं। इसके बाद में दोबारा एटीएम बूथ गया मशीन को ध्यान से देखने पर पता चला कि पैसे निकालने वाले जगह पर टेप लगी हुई थी। अजीत कुमार के मुताबिक किसी व्यक्ति ने मशीन पर टेप लगाकर इस फर्जीवाडे को अंजाम दिया है। पुलिस का कहना है कि पीड़ित की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया गया है और जांच की जा रही है।

खाद्य विभाग का छापा, बर्फी, लड्डू एवं घेवर के उठाए नमूने

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। आगामी रक्षाबंधन पर्व के दृष्टिगत जनपद वासियों को शुद्ध खाद्य एवं पेय पदार्थ उपलब्ध कराने के उद्देश्य से जिलाधिकारी गौतमबुद्धनगर मेधा रूपम के निर्देशन में खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग के अधिकारीगण खाद्य प्रतिष्ठानों पर छापेमारी कर खाद्य पदार्थों के नमूने जांच करने के लिए संग्रहित कर रहे हैं।

इसी श्रृंखला में सहायक आयुक्त खाद्य द्वितीय सर्वेश मिश्रा ने जानकारी देते हुए बताया कि आज खाद्य सुरक्षा अधिकारी सैयद इबादुल्लाह, विशाल कुमार गुप्ता एवं अमर बहादुर सरोज की टीम द्वारा सेक्टर 63 स्थित वृन्दावन स्वीट्स से बर्फी एवं लड्डू का 01-01 नमूना लिया गया तथा छजारसी नोएडा स्थित संजय की छेना रसगुल्ला

निर्माणशाला से छेना रसगुल्ला का 01 नमूना लेकर शेष लगभग 365 किलो रसगुल्ला अस्वच्छ्कर वातावरण में निर्माण होने एवं प्रदूषित अवस्था में पाए जाने के कारण नष्ट करा दिया गया। खाद्य सुरक्षा अधिकारी मुकेश कुमार, रविंद्र नाथ वर्मा एवं मालती की टीम द्वारा जेवर स्थित ग्यासी मिष्ठान भंडार से घेवर का , उमेश मिष्ठान भंडार से घेवर का, रामेश्वरम मिष्ठान भंडार से घेवर का एवं शर्मा मिष्ठान भंडार से घेवर का 01-01 नमूना तथा जहांगीरपुर स्थित गोयल मिष्ठान भंडार से घेवर का 01 नमूना लिया गया। इसी प्रकार खाद्य सुरक्षा अधिकारी शैलेंद्र कुमार पांडेय, ओ पी सिंह एवं विजय बहादुर पटेल की तीसरी टीम द्वारा सलारपुर भंगेल नोएडा स्थित बीकानेर स्वीट्स से पेड़ा का 01 नमूना एवं सेक्टर 82 सलारपुर स्थित कान्हाभोग से रसगुल्ला का 01 नमूना लिया गया। इसी टीम द्वारा सोरखा सेक्टर 115 नोएडा स्थित कृष्णा इंटरप्राइजेज से बूंदी लड्डू, मोहन बर्फी व बेसन रोल का 01-01 नमूना लिया गया तथा बूंदी लड्डू में फंगस पाए जाने एवं मोहन बर्फी अस्वच्छ्कर अवस्था में पाए जाने पर लगभग 65 किलो बूंदी लड्डू व लगभग 25 किलो मोहन बर्फी मौके पर ही नष्ट कराई गई। इस प्रकार कुल 13 नमूने लेकर प्रयोगशाला प्रेषित किए जा रहे हैं। सहायक आयुक्त खाद्य द्वितीय ने बताया कि आगे भी इसी प्रकार से जिलाधिकारी के निर्देशन में जांच अभियान संचालित करते हुए नमूने संग्रहित करने की कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी, ताकि जनपद वासियों को आगामी रक्षाबंधन पर्व के दौरान निर्धारित मानकों के अनुरूप शुद्ध खाद्य एवं पेय पदार्थ उपलब्ध हो सके।

पृष्ठ एक के शेष....

किसानों का हित...

कहा कि किसानों की आय बढ़ाना, खेती पर खर्च कम करना, आय के नए स्रोत बनाना, इन लक्ष्यों पर हम लगातार काम कर रहे हैं। हमारी सरकार ने किसानों की ताकत को देश की प्रगति का आधार माना है। इसलिए बीते वर्षों में जो नीतियां बनी उनमें सिर्फ मदद नहीं थी बल्कि किसानों में भरोसा बढ़ाने का प्रयास भी थी। पीएम सम्मान निधि से मिलने वाली सहायता ने छोटे किसानों को आत्मबल दिया है। पीएम फसल बीमा योजना ने किसानों को जोखिम से सुरक्षा दी है। सिंचाई से जुड़ी समस्या को पीएम कृषि सिंचाई योजना के माध्यम से दूर किया गया है। छोटे किसानों की संगठित शक्ति बढ़ी है. को ऑपरेरिव और सेल्फ हेल्प ग्रुप को आर्थिक मदद ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मदद की है। पीएम किसान सम्पदा योजना ने नई फूड प्रोसेसिंग यूनिट और भंडारण को गति दी है।

ड्रोन देखने गए युवक...

रॉड लगने से उसका सिर फट गया। किसी तरह उसने वहां से भागकर अपनी जान बचाई। दनकौर थाना प्रभारी का कहना है कि पीड़ित की शिकायत पर आरोपियों के खिलाफ मारपीट व एससी/एसटी एक्ट के तहत मामला दर्ज कर लिया गया है। पुलिस मामले की जांच पड़ताल कर रही है।

स्कूल की फीस जमा...

अपने बच्चों को लेकर जा सकता है। निरंजन सिंह के मुताबिक उसने जल्द ही बकाया फीस जमा करने की बात कही। लेकिन स्कूलकर्मी फीस जमा करने की जिद पर अड़े रहे। इसके बाद सभी उसे घसीट कर स्कूल के भीतर ले गए और लाठी-डंडों से उसके साथ मारपीट की। मारपीट में उसकी नाक, आंख और हाथ में गंभीर चोटें आई हैं। किसी तरह इन लोगों के चंगुल से छूटकर वह स्कूल से बाहर निकाला और पुलिस को सूचना दी। थाना प्रभारी का कहना है कि पीड़ित की शिकायत पर आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है।

बीएसएफ का जवान ...

मारपीट करना शुरू कर दिया था। जितेंद्र द्वारा कई बार बुरी तरह से उसके साथ बेरहमी से मारपीट की गई। इस मामले में उसके परिजनों व रिश्तेदारों ने कई बार जितेंद्र को समझने का प्रयास किया लेकिन उसकी हरकतों में बदलाव नहीं आया।

रीमा के मुताबिक 1 अगस्त की तड़के जितेंद्र ने उसके साथ बेवजह मारपीट की और उसके शरीर पर पेन से जानलेवा वार किए। जितेंद्र इस कदर गुस्से में था कि वह उसे जान से करने पर उतारू था। रीमा के मुताबिक किसी तरह उसने मौका पाकर अपने मायके में फोन किया। इसके बाद मायके वाले उसके घर पहुंचे और उसे जितेंद्र के चंगुल से छुड़ाकर अपने साथ घर ले आए। पुलिस का कहना है कि आरोपी के खिलाफ उसकी पत्नी की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया गया है।

झुग्गी-झोपड़ी...

फ्लैटों का आवंटन कर उनको कब्जा दिया जाए। 20 वर्ष तक फ्लैटों के हस्तांतरण पर लगी रोक हटाकर इसे 10 वर्ष किया जाए। केन्द्र सरकार से मिलने वाली 2.5 लाख की सब्सिडी उन्हें भी दी जाए।

11वीं की छात्रा को ...

पता चला कि उनकी बेटी स्कूल नहीं आई थी। विनोद ने पड़ोस में रहने वाले प्रिंस पुत्र देवी सिंह पर अपनी बेटी को बहला-फुसलाकर भगा ले जाने का शक जताते हुए रिपोर्ट दर्ज कराई है। पुलिस का कहना है कि आरोपी युवक और किशोरी की तलाश की जा रही है।

गांजा पीकर डॉग...

प्रिया के मुताबिक वह अपनी फीमेल डॉग को तुरंत पशु चिकित्सा के पास लेकर पहुंची जांच के बाद पता चला कि उसके शरीर में अलग-अलग जगह से चार हड्डियां टूट गई हैं और उसे पैरालिसिस हो गया है जिससे वह आजीवन चल नहीं पाएगी। प्रिया की शिकायत पर पुलिस ने आरिफ हुसैन के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है।

किसानों व डेयरी...

क्योंकि अमेरिका में गायों को भोजन के रूप में मांस और मांस से बने प्रोडक्ट दिए जाते हैं। भारत ने इन मांगों का सख्ती से विरोध किया। इससे न सिर्फ धार्मिक संवेदनशीलता का मामला सामने आ सकता था बल्कि डेयरी बाजार खोलने से स्थानीय किसानों की आजीविका खतरे में पड़ सकती थी। अमेरिकी डेयरी प्रोडक्ट सस्ते हैं, और भारतीय किसान पहले से ही कम आय और वैश्विक प्रतिस्पर्धा से जूझ रहे हैं। अमेरिका की मांगों को मानने से इन डेयरी पालकों के सामने अपने उत्पादों को बेचने की समस्या आ सकती थी।

फोर्टिस के पास...

नहीं होती। बहुत कम स्पेस में चार फ्लोर तक की बन सकती है। ये पूरी पार्किंग सेंसर बेस्ड होती है। इसलिए चोरी से लेकर टूट फूट का खतरा नहीं होता। आपरेशन के लिए ज्यादा मैन पावर की आवश्यकता नहीं है। हालांकि संचालन के लिए उसी कंपनी को प्रिफरेंस दिया जाएगा जो पहले इसका संचालन कर चुकी है।

कूड़ा गाड़ी रोकने पर...

करने दिया गया। इस मामले में ब्लू प्लेनेट कंपनी द्वारा भी पूर्व में बीटा-2 थाने में लिखित शिकायत दी गई थी। कूड़ा ना उठने से परेशान सेक्टर के निवासियों एवं पदाधिकारी ने प्राधिकरण अधिकारियों के समक्ष अपनी शिकायत दर्ज कराई। अधिकारियों के निर्देश पर महिला सविता शर्मा के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया गया है।

ऑक्सीजन सिलेंडर प्लांट में जोरदार धमाका, दो लोगों की मौत

मोहाली, 6 अगस्त (एजेंसियां)। पंजाब के मोहाली ज़िले में बुधवार सुबह एक ऑक्सीजन सिलेंडर प्लांट में हुए भीषण विस्फोट में दो लोगों की मौत हो गई और तीन अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। जानकारी के मुताबिक, मोहाल के औद्योगिक क्षेत्र, फेज़-9 स्थित एक प्लांट में हुए विस्फोट की आवाज दूर तक सुनाई दी। इससे इलाके में हड़कंप मच गया। घटना के बाद उप-मंडल मजिस्ट्रेट सहित पुलिस और नागरिक प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी स्थिति का आकलन करने और बचाव कार्यों का निरीक्षण करने के लिए घटनास्थल पर पहुंचे। घायलों को इलाज के लिए मोहाली के सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अधिकारियों ने बताया कि तीनों गंभीर रूप से घायल हैं और उनकी स्थिति पर कड़ी नज़र रखी जा रही है। विस्फोट के कारणों का अभी पता नहीं चल पाया है और आगे की जांच जारी है।

मुंबई में कबूतरखाना कवर हटाने पर हिंसा

मुंबई, 6 अगस्त (एजेंसियां)। मुंबई के दादर इलाके में बुधवार को शहर की म्युनिसिपल कॉरपोरेशन द्वारा कबूतरखाना (कबूतरों को खाना खिलाने की जगह) को ढकने के लिए लगाई गई टारपॉलिन को कुछ विरोधी हटाने लगे। यह कार्रवाई तब हुई जब बॉम्बे हाई कोर्ट ने ऐसे कबूतरखानों को बंद करने का आदेश दिया था। यहां मुख्य रूप से जैन समुदाय के नाराज प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच झड़प हो गई, क्योंकि पुलिस ने टारपॉलिन हटाने से रोकने की कोशिश की। बाद में मुंबई के उपनगरीय जिले के संरक्षक मंत्री मंगल प्रभात लोढ़ा मौके पर पहुंचे और इस घटना की कड़ी निंदा की। उन्होंने कहा कि पुलिस इस मामले में उचित कार्रवाई करेगी।

निजी आई अस्पताल में गैरकानूनी ऑपरेशन

मुंबई, 6 अगस्त (एजेंसियां)। मुंबई के वाशी इलाके में एक नामी आई अस्पताल में बिना लाइसेंस के ऑपरेशन करने के कारण पांच मरीजों को गंभीर आंखों का संक्रमण हुआ है। पुलिस ने इस मामले में ऑपरेशन करने वाले दो नेत्र चिकित्सकों के खिलाफ केस दर्ज किया है। जानकारी के अनुसार, ये ऑपरेशन दिसंबर 2024 से मार्च 2025 के बीच हुए थे। पुलिस के अनुसार, आरोपित डॉक्टरों ने जल्दबाजी और लापरवाही से ऑपरेशन किए, जिससे पांच मरीजों की आंखों में गंभीर चोट लगी। इनमें 65 साल से ऊपर की एक दंपती भी शामिल हैं। ऑपरेशन के बाद मरीजों को स्यूडोमोनास नामक वायरस से संक्रमण हुआ। पुलिस ने बताया कि इन डॉक्टरों ने महाराष्ट्र मेडिकल काउंसिल से अपने लाइसेंस का नवीनीकरण नहीं कराया था, फिर भी उन्होंने ऑपरेशन किए। सिविल सर्जन की जांच रिपोर्ट के आधार पर पुलिस ने सोमवार को दोनों डॉक्टरों के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धाराओं 125(ए), 125(बी) और 3(5) के तहत और नेशनल मेडिकल कमीशन एक्ट के प्रावधानों के तहत एफआईआर दर्ज की है।

बंदूक की नोंक पर व्यापारी से लूट

शहडोल, 6 अगस्त (एजेंसियां)। शहडोल। जिले में अपराधियों के हौसले बुलंद होते जा रहे है। खनौधी बाजार कर लौट रहे व्यापारी के साथ रास्ते में बंदूक की नोक पर लूट की वारदात को अज्ञात चार बदमाशों ने अंजाम देकर मौके से फरार हो गए है।घटना की जानकारी के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने बंदूक से चली गोली की पांच खोखे मौके से बरामद किए हैं। पुलिस ने बताया कि गोहपारू थाना क्षेत्र के रतहर गांव के रहने वाले अनिल कुमार सोनी अपने पुत्र के साथ खनौधी बाजार कर अपनी बाइक से वापस घर लौट रहे थे, तभी रात तकरीबन 8 बजे वह जैसे ही मलदा गांव के पास स्थित क्रेशर के पास पहुंचे, तभी एक बिना नंबर की पल्सर बाइक में सवार चार बदमाश, जो पीड़ित की बाईक के पीछे से आ कर व्यापारी की बाइक के आगे अपनी बाइक लगा दी।और बंदूक की नोक पर लूट की घटना को अंजाम देते हुए भाग गए।

टमाटर बना लाल सोना 3 दिन में दाम दोगुने

इंदौर, 6 अगस्त (एजेंसियां)। इंदौर सहित देशभर में टमाटर एक बार फिर अपने बढ़ते दामों को लेकर चर्चा में आ गया है। कुछ दिन पहले तक जो टमाटर 15 से 20 रुपए प्रति किलो में मिल रहा था, वही अब 50 से 80 रुपए प्रति किलो बिक रहा है। केवल तीन दिन में दामों में इतनी तेजी आने से आम नागरिक हैरान हैं। मंडी व्यापारी बंटी शर्मा ने बताया कि बेंगलुरु, महाराष्ट्र के संगमनेर और नारायण गांव से देशभर में टमाटर की सप्लाई हो रही है। फसल कमजोर होने, बारिश व बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में मांग बढ़ने और आवक घटने के चलते यह अचानक मूल्यवृद्धि हुई है। इंदौर की मंडी में जहां रोज 18 से 20 गाड़ियां टमाटर की आ रहीं थीं, वहीं अब यह संख्या घटकर सिर्फ 12 से 15 रह गई है। इससे थोक बाजार में टमाटर का भाव 35 से 40 रुपए किलो तक पहुंच गया है। विशेषज्ञों का मानना है कि सितंबर में नई फसल आने तक टमाटर के दामों में गिरावट के आसार नजर नहीं आ रहे हैं।

7 अगस्त को रात 9 बजे पटना लैंड करेंगे अमित शाह

सीतामढ़ी, 6 अगस्त (एजेंसियां)। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 की गहमागहमी के बीच केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह पटना आ रहे हैं। बीजेपी की ओर से मिली जानकारी के मुताबिक अमित शाह 7 अगस्त यानी गुरुवार को पटना आ रहे हैं। बताया जा रहा है कि गृहमंत्री रात करीब 9 बजे पटना एयरपोर्ट पर लैंड करेंगे। रात में ही बीजेपी के कुछ नेताओं के साथ पटना में बैठक करेंगे।

उसके बाद अगले दिन 8 अगस्त को यानी शुक्रवार को सीतामढ़ी में आयोजित होने वाले कार्यक्रम का हिस्सा बनेंगे। अमित शाह माता जानकी मंदिर के शिलान्यास कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर शामिल होने बिहार आ रहे हैं। इस ऐतिहासिक अवसर को लेकर तैयारियां जोरों पर हैं। गृह मंत्री के आगमन और मंदिर निर्माण के भूमि पूजन के भव्य कार्यक्रम को लेकर विधायक मिथिलेश कुमार ने लोगों को व्यक्तिगत रूप से आमंत्रित करने के लिए पूरे शहर में भ्रमण किया और अक्षत (चावल) प्रदान किए। रथों को रवाना करने के बाद, विधायक की माता ने भी श्रद्धालुओं को अक्षत प्रदान कर कार्यक्रम में भाग लेने की अपील की। माता सीता के मंदिर के निर्माण को लेकर जिलेभर में भक्तों के बीच भारी उत्साह और भक्ति का माहौल देखा जा रहा है। यह भूमि पूजन कार्यक्रम सीतामढ़ी के लिए एक ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण अवसर माना जा रहा है, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों के शामिल होने की उम्मीद है।

हवाईअड्डों पर आतंकी हमले का खतरा

नई दिल्ली, 6 अगस्त (एजेंसियां)। देश के हवाई अड्डों पर संभावित आतंकी खतरे को लेकर अलर्ट जारी करते हुए सुरक्षा बढ़ाने के निर्देश दिए गए हैं। नागर विमानन सुरक्षा ब्यूरो (बीसीएएस) ने 22 सितंबर से दो अक्टूबर की अवधि के दौरान एक आतंकवादी समूह से संभावित खतरे के मद्देनजर हवाई अड्डों पर सुरक्षा बढ़ाने का निर्देश दिया है। नागर विमानन सुरक्षा ब्यूरो (बीसीएएस) की ओर से इस संबंध में एक एडवाइजरी जारी की गई है। इस एडवाइजरी में कहा गया है- ''केंद्रीय सुरक्षा एजेंसी से हाल ही में प्राप्त जानकारी के मद्देनजर सभी हवाई अड्डों पर सभी संबंधित पक्षों को निर्देशित किया गया है कि वे हवाई अड्डों, हवाई पट्टियों, हवाई क्षेत्रों, वायुसेना के स्टेशन, और हेलीपेड पर सुरक्षा उपायों को बढ़ाएं। केंद्रीय सुरक्षा एजेंसी से प्राप्त जानकारी में 22 सितंबर से दो अक्टूबर 2025 के बीच आतंकवादी समूहों से संभावित खतरे का संकेत दिया गया है।'' केंद्रीय सुरक्षा एजेंसी से प्राप्त जानकारी में 22 सितंबर से दो अक्टूबर 2025 के बीच आतंकवादी समूहों से संभावित खतरे का संकेत दिया गया है।

पूर्व मंत्री स्वामी प्रसाद पर हमला

हमलावर बोला- सनातन को अपमानित करते हैं

रायबरेली, 6 अगस्त (एजेंसियां)। पूर्व मंत्री स्वामी प्रसाद मौर्य का शहर के साथस मोटल चौराहा पर स्वागत हो रहा था। इस दौरान दो युवकों ने उनके साथ मारपीट की। इसके बाद समर्थकों ने दोनों युवकों को पीटा। पुलिस ने पिटाई करने वाले दोनों युवकों को हिरासत में ले लिया है। सीओ सदर अमित सिंह ने कहा पकड़े गए युवकों की अभी पहचान नहीं हुई है। तहरीर मिलते ही मुकदमा दर्ज होगा। घटना पर प्रतिक्रिया देते हुए स्वामी प्रसाद ने कहा कि ये करणी सेना के नाम पर कीड़े-मकोड़े हैं। ये लोग खुलेआम कानून व्यवस्था की धज्जियां उड़ा रहे हैं। ये बताता है कि योगी सरकार में गुंडे-माफियाओं के हौंसले कितने बढ़े हुए हैं। वहीं, पुलिस की गिरफ्त में आए हमलावर ने कहा कि स्वामी लगातार सनातन का विरोध करते हैं इसलिए उन पर हमला किया। स्वामी प्रसाद लगातार विवादित टिप्पणियां करने के कारण चर्चा में रहते हैं। बुधवार को जब वह रायबरेली पहुंचे तो उनके कार्यकर्ताओं ने मोटल चौराहे पर उनका स्वागत किया। इसी दौरान दो युवकों ने उन पर हमला कर दिया जिस पर वहां मौजूद उनके समर्थकों ने दोनों हमलावरों को पकड़ लिया और उनके साथ मारपीट की। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

मुश्किल में बीजेपी विधायक संजय पाठक

443 करोड़ की वसूली का शिकंजा अवैध खनन का है मामला

कटनी, 6 अगस्त (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश स्थित कटनी जिले के विजयराघवगढ़ से बीजेपी विधायक संजय पाठक इन दिनों एक बार फिर विवादों में आ गए हैं। जबलपुर जिले की सिहोरा तहसील में स्थित उनकी खनन कंपनियों आनंद माइनिंग, निर्मला मिनरल्स और पेसिफिक एक्सपोर्ट पर अवैध खनन का आरोप लगा है। मुख्यमंत्री डॉ। मोहन यादव ने 5 अगस्त को विधानसभा सत्र में लिखित जवाब में स्पष्ट किया कि इन कंपनियों से सरकार 443 करोड़ रुपये की राशि वसूलेगी। इस कार्रवाई का आधार भारतीय खनन ब्यूरो की रिपोर्ट है, जिसमें स्वीकृत मात्रा से अधिक ब्लू डस्ट का उत्खनन सामने आया है। इस मुद्दे को कांग्रेस विधायक अभिजीत शाह ने विधानसभा में प्रश्नकाल के दौरान उठाया था। उन्होंने पूछा था कि क्या आनंद माइनिंग निर्मला मिनरल्स और पेसिफिक एक्सपोर्ट द्वारा तय मात्रा से अधिक खनन कर शासन को लगभग 1000 करोड़ रुपये का नुकसान पहुंचाया गया है? इसी के जवाब में बताया गया कि शिकायतकर्ता आशुतोष मनु दीक्षित की शिकायत के आधार पर 23 अप्रैल 2025 को एक जांच दल गठित किया गया था। इसके बाद 6 जून को सौंपे गए जांच प्रतिवेदन में 443 करोड़ की राशि वसूलने की सिफारिश भी की गई, जिसमें जीएसटी भी शामिल किया गया है।

महिला सांसद से चैन छीनने वाला आरोपी गिरफ्तार

नई दिल्ली, 6 अगस्त (एजेंसियां)। दक्षिणी जिला पुलिस ने महिला सांसद सुधा आर की चैन छीने वाले आरोपी रावत को रात को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी पर 20 से ज्यादा मामले दर्ज हैं और वह दक्षिणी दिल्ली के हरकेश नगर का रहने वाला है। आरोपी ने अकेले ही वारदात को अंजाम दिया था। पुलिस अधिकारियों के अनुसार वह ज्यादातर अकेली चेन झपटमरी की वारदातों को अंजाम देता था।

आरोपी रावत ने महिला सांसद की करीबन 4 तोले की सोने की चेन उस समय छीन ली थी जब वह महिला साथी के साथ पोलैंड एंबेसी के पास सुबह की सैर के लिए निकली थी । इस मामले में चाणक्यपुरी थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालना शुरू कर दिया था। देर रात तक आरोपी सफदरजंग हॉस्पिटल के सामने से जाते हुए ट्रैक हुआ था। जब मामला दक्षिण दिल्ली में पहुंचा तो दक्षिण जिला पुलिस सक्रिय हो गई। इसके बाद दक्षिण जिले के वाहन चोरी निरोधक दस्ते ने आरोपी रावत को हरकेश नगर से गिरफ्तार कर लिया।

ईडी की बड़ी कार्रवाई, दिल्ली, नोएडा समेत 11 जगहों पर छापेमारी

नई दिल्ली, 6 अगस्त (एजेंसियां)। पुलिस या जांच अधिकारी बनकर लोगों से ठगी करने वालों पर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने बड़ी कार्रवाई की है। ईडी ने बुधवार नोएडा, दिल्ली, गुरुग्राम, देहरादून समेत देशभर में 11 जगहों पर छापेमारी की तलाशी अभियान चलाया। अधिकारियों ने बताया कि आरोपी खुद को पुलिय या जांच अधिकारी बताते थे। आरोपी लोगों को गिरफ्तार करने की धमकी देकर ठगी करते थे। बताया गया कि सीबीआई और पुलिस की दर्ज एफआईआर पर जांच शुरू की गई है। ईडी की जांच में खुलासा हुआ है कि जांच अधिकारी और पुलिस के अलावा ठग कई तरीकों का

उपयोग करते थे। इसमें वह खुद को मल्टी नेशनल कंपनी का एजेंट भी बताते थे। धोखेबाज ठगी के लिए खुद को माइक्रोसॉफ्ट और अमेजन के तकनीकी सहायता सेवा एजेंट बताते थे। ईडी के अधिकारियों ने बताया कि आरोपियों की ठगी का जाल केवल भारत तक सीमित नहीं था।

इन पहुंच विदेश तक में थी। पुलिस बनकर कई बार इन्होंने विदेशी नागरिकों को भी ठगा है। ईडी मामले में अभी जांच कर रही है। जांच में और भी कई बड़े खुलासे होने की उम्मीद है। ईडी ने खुलासा किया है कि आरोपी ठगी से कमाया पैसा कहीं जमा नहीं करते थे। नकदी को वह क्रिप्टो करेंसी में बदल देते थे। माना जाता है कि इससे इस रकम के जांच में आने की संभावना बेहद कम होती है।

'अब उनका पार्टी से कोई संबंध नहीं'

जज बनीं आरती साठे पर मचा सियासी घमासान बीजेपी से आया जवाब

मुंबई, 6 अगस्त (एजेंसियां)। बॉम्बे हाई कोर्ट में पूर्व बीजेपी प्रवक्ता आरती साठे की बतौर न्यायाधीश नियुक्ति को लेकर सियासी विवाद खड़ा जारी है। कांग्रेस, एनसीपी (एसपी) और टीएमसी नेताओं ने न्याय प्रणाली की निष्पक्षता पर सवाल उठाए हैं।वहीं बीजेपी ने भी इस विवाद पर अपनी प्रतिक्रिया दी है। पार्टी ने इन आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए कहा कि साठे अब पार्टी से पूरी तरह अलग हो चुकी हैं। दरअसल पूर्व बीजेपी प्रवक्ता रही आरती साठे को बॉम्बे हाई कोर्ट में बतौर न्यायाधीश नियुक्ति किया गया। इस पर कांग्रेस विधायक दल के नेता विजय वडेट्टीवार ने कहा कि अगर किसी पूर्व प्रवक्ता को जज बना दिया जाए, तो आम जनता को निष्पक्ष न्याय कैसे मिलेगा? उन्होंने पूछा कि क्या संविधान की रक्षा इस तरह संभव है। वहीं एनसीपी (एसपी) विधायक रोहित पवार ने भी आरती साठे की नियुक्ति पर आपत्ति जताई और फरवरी 2023 में महाराष्ट्र बीजेपी द्वारा जारी प्रवक्ता नियुक्ति पत्र का स्क्रीनशॉट साझा किया। उनका दावा है कि यह नियुक्ति न्यायपालिका की निष्पक्षता को प्रभावित कर सकती है। बीजेपी की ओर से राज्य के मुख्य प्रवक्ता केशव उपाध्ये ने विपक्ष के आरोपों को नकारते हुए कहा कि साठे ने डेढ़ साल पहले पार्टी से इस्तीफा दे दिया था और अब उनका भाजपा से कोई संबंध नहीं है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और रोहित पवार को कोलेजियम के निर्णय पर उंगली उठाने का कोई अधिकार नहीं है। उपाध्ये ने यह भी जोड़ा कि यह पूरी तरह राजनीतिक हमला है जो न्यायपालिका की गरिमा को ठेस पहुंचा सकता है।

शिक्षा मंत्री हरजोत सिंह बैंस अकाल तख्त पर पेश, धार्मिक सजा का एलान

अमृतसर, 6 अगस्त (एजेंसियां)। पंजाब के शिक्षा मंत्री हरजोत सिंह बैंस ने आज सुबह सिखों की सर्वोच्च धार्मिक संस्था श्री अकाल तख्त साहिब के समक्ष पेश होकर श्रीनगर में आयोजित गुरु तेग बहादुर जी के 350वें शहीदी दिवस के विवादास्पद कार्यक्रम को लेकर अपना स्पष्टीकरण दिया। इस कार्यक्रम में नृत्य और गीतों के आयोजन से सिख संगत की भावनाएं आहत हुई थीं, जिसके चलते अकाल तख्त के कार्यवाहक जत्थेदार ज्ञानी कुलदीप सिंह गड़गज ने उन्हें तलब किया था। अकाल तख्त की ओर से हरजोत सिंह बैंस को धार्मिक सजा सुनाई गई है। सजा के तहत, मंत्री बैंस आज श्री हरमंदिर साहिब से गुरुद्वारा गुरु का महल तक पैदल जाएंगे और रास्ते की स्थिति का जायजा लेंगे। साथ ही, वे गुरुद्वारा गुरु का महल, गुरुद्वारा बाबा बकाला साहिब, और गुरुद्वारा वर्क को जाने वाले 100 मीटर के रास्तों को ठीक करवाएंगे। ये सभी गुरुद्वारे श्री गुरु तेग बहादुर जी से संबंधित हैं।

'सभी कार्यस्थलों पर पॉश ऑडिट अनिवार्य किया जाए'

महाराष्ट्र राज्य महिला आयोग ने जताई चिंता

मुंबई, 6 अगस्त (एजेंसियां)। महाराष्ट्र राज्य महिला आयोग ने कार्यस्थलों पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न से सुरक्षा के लिए बनाए गए कानून पॉश एक्ट की कमजोर अमलवारी पर चिंता जताई है। आयोग ने सभी दफ्तरों में पॉश ऑडिट को अनिवार्य करने की मांग की है। आयोग की अध्यक्ष रूपाली चाकणकर ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक वीडियो संदेश में कहा कि उन्होंने हाल ही में राज्य के कई हिस्सों का दौरा किया और पाया कि कई दफ्तरों में आंतरिक शिकायत समिति (आईसीसी) तो बनी है, लेकिन वो सिर्फ कागजों पर ही मौजूद है। उन्होंने कहा, 'कई बार समिति के सदस्यों को यह तक नहीं पता होता कि उनके अधिकार और जिम्मेदारियां क्या हैं। ऐसे में महिलाएं खुद को असुरक्षित महसूस करती हैं, भले ही कमेटी हो भी।' इस स्थिति को सुधारने के लिए महिला आयोग ने महिला और बाल विकास मंत्री को एक प्रस्ताव सौंपा है। इस प्रस्ताव में मांग की गई है कि पॉश कानून के अनुपालन की नियमित जांच के लिए सरकार एक सरकारी निर्णय (जीआर) जारी करे। रूपाली चाकणकर ने कहा, 'पॉश ऑडिट को वित्तीय ऑडिट या अग्नि सुरक्षा ऑडिट जितना ही जरूरी माना जाना चाहिए।' उन्होंने आगे कहा कि ऐसे ऑडिट से सुनिश्चित होगा कि कार्यस्थल सिर्फ कानूनन सुरक्षित नहीं, बल्कि वास्तव में महिलाओं के लिए सुरक्षित और सहायक वातावरण वाले हों। कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न की रोकथाम, निषेध और निवारण एक्ट 2013 में लागू हुआ था।

सीएम पुष्कर सिंह धामी उत्तरकाशी पहुंचे

देवभूमि, 6 अगस्त (एजेंसियां)। उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में धराली क्षेत्र में आई भीषण प्राकृतिक आपदा को देखते हुए मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने उत्तरकाशी स्थित आपदा नियंत्रण कक्ष से राहत एवं बचाव कार्यों की गहन समीक्षा की। मुख्यमंत्री ने प्रदेश के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों एवं सेना के प्रतिनिधियों से स्थिति की वस्तुनिष्ठ जानकारी प्राप्त की और उन्हें राहत कार्यों को तीव्र गति से आगे बढ़ाने के निर्देश दिए। प्रदेश सरकार राहत कार्यों को प्राथमिकता देते हुए प्रत्येक प्रभावित नागरिक तक सहायता पहुंचाने हेतु कटिबद्ध है। सीएम धामी ने बताया कि उन्होंने बताया कि क्षेत्र में रेस्क्यू एवं मेडिकल कैंप्स की स्थापना कर दी गई है तथा प्रभावितों के लिए भोजन एवं आवश्यक सामग्री की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जा रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राहत एवं बचाव कार्य युद्धस्तर पर प्रारम्भ कर दिए गए हैं। भारतीय वायुसेना के चिनूक व एमआई-17 हेलीकॉप्टर पूरी तरह से तैयार स्थिति में हैं, ताकि आवश्यकतानुसार शीघ्रतम कार्रवाई सुनिश्चित की जा सके। भारतीय वायु सेना के चिनूक, एमआई-17 वी5, एएलएच और चीता हेलीकॉप्टर चंडीगढ़ एयरबेस पर उड़ान भरने के लिए तैयार हैं, मौसम खराब होने की वजह से उड़ान नहीं भर पा रहे हैं।

मौसम में सुधार होते ही ये हेलीकॉप्टर उपकरणों और राहत सामग्री के साथ उत्तरकाशी के लिए उड़ान भरेंगे। उत्तरकाशी जिले में बादल फटने से भयंकर तबाही मची हुई है। 200 से अधिक लोग लापता बताए जा रहे हैं। बादल फटने के बाद घर, दुकानें, बाजार और सड़कें बह गई हैं। लगातार बारिश हो रही है, ऐसे में रेस्क्यू ऑपरेशन चलाने में परेशानी आ रही है।

हिजबुल से फंड लेकर चल रही थी अलगाववादी साजिश

जमात से जुड़े तीन आरोपी

जम्मू, 6 अगस्त (एजेंसियां)। प्रतिबंधित संगठन जमात-ए-इस्लामी से जुड़ी कथित फंडिंग के मामले में राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) की विशेष अदालत ने तीन आरोपियों और एक ट्रस्ट के खिलाफ आरोप तय किए हैं। यह फैसला इस मामले में उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर दिया गया। विशेष न्यायाधीश संदीप गंदोत्रा ने अमीर मोहम्मद शम्सी, मुश्ताक अहमद मीर उर्फ जरगर निवासी राजोरी, अब्दुल हमीद गनई उर्फ फैयाज निवासी शोपियां, राजोरी में ही स्थित अल-हुदा एजुकेशनल ट्रस्ट के खिलाफ गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए) और भारतीय दंड संहिता की विभिन्न धाराओं के तहत आरोप तय किए।

ब्रेक फेल हुआ तो चालक ने मालगाड़ी की तरफ मोड़ दिया ट्रक, कई लोगों की बचाई जान

उमरिया, 6 अगस्त (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश के उमरिया जिले के जनपद मुख्यालय पाली में बुधवार को एक ट्रक अनियंत्रित होकर रेलवे स्टेशन में प्रवेश कर गया और ट्रैक से गुजर रही मालगाड़ी से टकरा गया। बताया जा रहा है कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि ट्रक के ब्रेक फेल हो गई थे। इस घटना में रेलवे ट्रैक, मालगाड़ी तो कोई नुकसान नहीं पहुंचा लेकिन ट्रक का अगला हिस्सा बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया है। घटना के बाद रेलवे अधिकारी मौके पर पहुंच गए। साथ ही ट्रक चालक के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। यह जानकारी सामने आई है कि ट्रक चालक ने सड़क पर जा रहे लोगों को बचाने के लिए रेलवे स्टेशन की तरफ ट्रक को मोड़ दिया था।

इसी दौरान ट्रैक से गुजर रही मालगाड़ी से ट्रक जा कर टकरा गया। जानकारी के मुताबिक इस हादसे में कोई हताहत नहीं हुआ है। हालांकि ट्रक के सामने का हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया है। बताया जाता है कि ट्रक क्रमांक एमपी 54 1178 सुबह कटनी से बुढार की ओर जा रहा था। मेन रोड पर ही नगर का बस स्टैंड है, यहीं के कुछ दूर पर रेलवे स्टेशन भी स्थित है। यही कारण है कि यह इलाका भीड़-भाड़ा वाला है

गर्लफ्रेंड से मिलने आधी रात को पहुंचा युवक, पति और साले ने बेल्ट से पीट-पीटकर मार डाला

खंडवा, 6 अगस्त (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश के खंडवा में रात एक युवक को पीट-पीटकर मार डाला। आरोपी जीजा-साले ने पहले युवक को रस्सी से बांधा और फिर बेल्ट और लकड़ी से इतना पीटा कि वह अधमरा हो गया। परिजन द्वारा छुड़ाए जाने के कुछ देर बाद युवक ने दम तोड़ दिया। अवैध संबंध से जुड़े हत्या के मामले में पुलिस ने दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। जानकारी के मुताबिक देर रात करीब 3 बजे देवीराम (35 वर्ष) एक महिला से मिलने उसके घर गया था।

वहां पहले से घात लगाए बैठे महिला के पति चंदन लाल (बदला हुआ नाम) और उसके साले भगवानदीन (बदला हुआ नाम) ने देवीराम को पकड़ लिया। दोनों ने उसे आंगन में लगे पेड़ से बांधकर करीब एक घंटे तक बेरहमी से पीटा। देवीराम की चीख-पुकार सुनकर उसकी मां ने बड़े बेटे महेंद्र को जगाया। महेंद्र ने मौके पर पहुंचकर अधमरी हालत में अपने भाई को छुड़ाया। कुछ ही देर बाद देवीराम ने दम तोड़ दिया। उसके शरीर पर बेल्ट और लकड़ी से की गई पिटाई के गहरे घाव मिले हैं। पुलिस ने बताया कि मृतक और आरोपी अलग-अलग समाज से है।

पुलिस की लापरवाही, बेकसूर ऑटो ड्राइवर को थमाया तड़ीपार का नोटिस

अहमदाबाद, 6 अगस्त (एजेंसियां)। अहमदाबाद के बापूनगर इलाके में रहने वाले 50 साल के ऑटो रिक्शा चालक मोहम्मद अली राजपूत को पुलिस की एक मामूली टाइपिंग गलती की वजह से बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। दरअसल, पुलिस ने उनके बेटे मोहम्मद फैजल की जगह गलती से उन्हें ही तड़ीपार का नोटिस भेज दिया है। मोहम्मद अली राजपूत पिछले तीन महीनों से ऐसे नोटिसों से परेशान हैं। ताजा नोटिस 30 जुलाई को उन्हें मिला जिसमें कहा गया कि अगर वह 4 अगस्त को पुलिस के सामने पेश नहीं हुए तो बिना सुनवाई के ही तड़ीपार का आदेश जारी कर दिया जाएगा और उन्हें शहर छोड़ना पड़ेगा। राजपूत ने इस मामले में वकील की सलाह लेकर पुलिस से संपर्क किया और बताया कि उनका कोई आपराधिक रिकॉर्ड नहीं है। उन्होंने बताया, 'मेरे और मेरे बेटे के नाम मिलते-जुलते हैं। शायद इसी वजह से पुलिस ने गलती से मेरा नाम नोटिस में लिख दिया।' पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार, मोहम्मद अली के 18 वर्षीय बेटे फैजल के खिलाफ दो अलग-अलग मामलों में आरोप दर्ज हैं। पहला मामला पिछले साल का है, जब फैजल नाबालिग था और उस पर मारपीट का आरोप लगा था। दूसरा मामला हाल ही में चोरी से संबंधित है, जो पुलिस ने दर्ज किया है। हालांकि, इन दोनों मामलों में मोहम्मद अली का नाम कहीं भी शामिल नहीं है और न ही उनके खिलाफ कोई आरोप दर्ज है।

श्रीकृष्ण की सीख : अपनी गलतियों से सीख लेकर आगे बढ़ें

पश्चाताप एक ऐसा भाव है जो हमारे मन को कई सालों तक जकड़े रख सकता है। कोई गलती जो हमसे अनजाने में हो गई, कोई निर्णय जो गलत साबित हुआ, ऐसी कई बातें होती हैं जो हमें अंदर से तोड़ सकती हैं। ये भाव हमें नष्ट करता है और हमें वर्तमान से अलग करके सिर्फ काश... की दुनिया में समेट देता है। श्रीमद् भगवद गीता में श्रीकृष्ण ने ऐसे सूत्र बताए हैं, जिन्हें अपनाने से हम पछतावे से मुक्त हो सकते हैं और जीवन में शांति पा सकते हैं...

कर्म का स्वभाव समझें, निष्काम कर्म करें

श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं-कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

अर्थः तुम्हारा अधिकार केवल कर्म करने में है, फल में नहीं।

ये श्लोक हमें सिखाता है कि हमारे हाथ में सिर्फ प्रयास करना है, परिणाम नहीं। जब हम अच्छा करने की मंशा रखते हैं, पर परिणाम वैसा नहीं आता, तब पछतावे का भाव आता है। इस भाव से बचना चाहते हैं तो हमें निष्काम कर्म करना चाहिए, अपने प्रयासों पर ध्यान देना चाहिए, न कि परिणामों पर। अगर किसी काम के लिए हमारी नीयत अच्छी है और उसमें असफलता मिलती है तो खुद को क्षमा करके आगे बढ़ना चाहिए। खुद को दोषी ठहराने से पछतावे का भाव बना रहेगा। जो बात हमारे नियंत्रण में नहीं है, उसके लिए दुखी नहीं होना चाहिए।

किसी बात का शोक करने से बचें

श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं - पण्डिता न अनुशोचन्ति।

अर्थः ज्ञानी व्यक्ति न जीवित के लिए शोक करता है और न मृत के लिए।

हमें किसी भी स्थिति में शोक नहीं करना चाहिए। गलती सभी मनुष्य करते हैं, लेकिन जो बुद्धिमान हैं, वे अपनी गलतियों से सीखते हैं, सुधार करते हैं और फिर आगे बढ़ जाते हैं। जब हम इस बात को अपने जीवन में उतार लेंगे तो असफल होने के बाद भी शोक नहीं होगा, हम पछतावे के भाव से बचे रहेंगे। गीता कहती है कि गलतियां हमारे कर्म का हिस्सा है, इसे सुधारकर हम बेहतर बन सकते हैं।

निराशा से बचें और आगे बढ़ते रहें

श्रीकृष्ण कहते हैं- क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ, नैतत्त्वय्युपपद्यते। उठिष्ठ!

अर्थः यह कायरता तुझ पर शोभा नहीं देती, उठ और युद्ध कर।

ये युद्ध प्रतीक है अपने भीतर के पछतावे से लड़ने का। श्रीकृष्ण हमें निराशा में डूबने नहीं देते, वे हमें आगे बढ़ने को प्रेरित करते हैं। पछतावे को खुद को सजा देने का माध्यम न बनाएं, बल्कि चरित्र निर्माण का अवसर बनाएं। जो बीत गया, उसे पकड़कर न बैठें, हर पल एक नई शुरुआत है।

समर्पण और क्षमा की शक्ति

श्रीकृष्ण कहते हैं- सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

अर्थः सब कुछ छोड़ कर मेरी शरण में आओ, मैं तुम्हें सभी पापों से मुक्त कर दूंगा। शोक मत करो।

श्रीकृष्ण कहते हैं कि यदि तुमने गलती की है, लेकिन हृदय से पछताते हो और सुधार का संकल्प लेते हो तो ईश्वर भी तुम्हें क्षमा कर देते हैं। खुद को उसी तरह क्षमा करें, जैसे भगवान करते हैं। पश्चाताप को नया मोड़ बनाएं, न कि आजीवन बोझ।

वर्तमान में जीना ही शांति पाने का सूत्र है

श्रीकृष्ण बार-बार अर्जुन को अभी में जीने को कहते हैं। भूतकाल की पीड़ा या भविष्य की चिंता दोनों ही हमें कमजोर बनाती हैं। शांति चाहते हैं तो वर्तमान पर ध्यान दें। वर्तमान ही सबसे शक्तिशाली क्षण है। अभी के कर्म को बेहतर बनाकर हम अतीत की गलती को सुधार सकते हैं। गलती से इंसान गिरता है, लेकिन उसे स्वीकार करके उठने वाला ही सच्चा साधक बनता है।

घर में इस जगह पर भूलकर भी ना रखें मनी प्लांट का पौधा

मनी प्लांट का पौधा लगाने से आती है सुख समृद्धि

अगर पौधे को सही दिशा में ना रखा जाए तो आप किसी भी पौधे की कितनी भी देखभाल करें, वह अंत में मुरझा सकता है। साथ ही इससे घर में नकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश हो सकता है और परिवार को आर्थिक या भावनात्मक नुकसान हो सकता है। वास्तु शास्त्र के अनुसार, पौधों का घर में सुख-शांति और समृद्धि से सीधा संबंध होता है। इन पौधों का ईश्वर से भी संबंध माना जाता है। मनी प्लांट का संबंध भौतिक सुख सुविधाओं के स्वामी शुक्र ग्रह से है। इस पौधे को घर में रखने से न केवल सुंदरता बढ़ती है, बल्कि सुख-समृद्धि भी आती है।

मनी प्लांट का पौधा इस दिशा में लगाएं

ज्योतिष और वास्तु शास्त्र कहता है कि अगर मनी प्लांट को सही दिशा में रखा जाए, तो यह नकारात्मक ऊर्जा को दूर करता है और घर में सकारात्मक ऊर्जा लाता है। इससे धन में वृद्धि होती है और आर्थिक तंगी से राहत मिलती है। तो मनी प्लांट लगाने की सही दिशा कौन सी है? वास्तु शास्त्र के अनुसार, इस पौधे को लगाने के लिए दक्षिण-पूर्व या आग्नेय कोण सबसे शुभ दिशा है। इस दिशा में मनी प्लांट लगाने से घर में सुख-समृद्धि और आर्थिक उन्नति आती है। इस दिशा की स्वामी देवी लक्ष्मी और हनुमान जी हैं तथा ग्रह प्रतिनिधि शुक्र हैं। मनी प्लांट का पौधा भूलकर भी इस दिशा में ना लगाएं

दूसरी ओर, मनी प्लांट को कभी भी उत्तर-पूर्व दिशा (ईशान कोण) में नहीं लगाना चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस दिशा का देवताओं के गुरु बृहस्पति देव हैं, जो असुरों के गुरु शुक्र ग्रह के विपरीत हैं। इस दिशा में मनी प्लांट लगाने से घर में आर्थिक नुकसान, कलह और नकारात्मकता आ सकती है। इसके अलावा, इस पौधे को दक्षिण-पश्चिम और पश्चिम दिशा में नहीं रखना चाहिए। इससे जीवन में ठहराव, करियर में रुकावट और आर्थिक अनिश्चितता आ सकती है। योध्या के ज्योतिषाचार्य कल्कि राम कहते हैं कि अगर मनी प्लांट को वास्तु के अनुसार दक्षिण-पूर्व कोने में रखा जाए तो घर में धन का प्रवाह बढ़ता है। साथ ही अगर ई वास्तु दोष है भी तो वह धीरे-धीरे दूर होने लगता है।

गुरुवार व्रत में क्या खाएं और क्या न खाएं?

आप पहली बार गुरुवार का व्रत रखने जा रहे हैं, तो कुछ जरूरी बातें जान लेना आपके लिए फायदेमंद रहेगा। हिंदू धर्म में हर दिन का संबंध किसी न किसी देवी-देवता से होता है और गुरुवार का दिन भगवान विष्णु को समर्पित होता है। इस दिन भक्त व्रत रखकर भगवान विष्णु और केले के पेड़ की पूजा करते हैं। ऐसा माना जाता है कि सच्चे मन से पूजा करने से हर मुश्किल आसान हो जाती है और जीवन में सुख-शांति आती है, लेकिन व्रत के दौरान सिर्फ पूजा ही नहीं, बल्कि खाने-पीने से जुड़ी कुछ बातों का ध्यान रखना भी बहुत ज़रूरी होता है। क्या खाएं, क्या नहीं?

व्रत में क्या खाएं?

गुरुवार व्रत में हल्का और पौष्टिक खाना लेना बेहतर होता है। इस दिन फलाहार करना ज्यादा सही माना जाता है:

दूध, दही, पनीर और मक्खन जैसी चीजें ली जा सकती हैं। इनसे शरीर को ताकत मिलती है और कमजोरी महसूस नहीं होती हैं ।

अगर आप गेहूं का आटा नहीं ले रहे हैं, तो कुट्टू का आटा, सिंघाड़े का आटा, अरारोट, राजगीरा या समा के चावल का इस्तेमाल करें।

संतरा, पपीता, अंगूर, तरबूज, खरबूज जैसे फल खाएं। इससे बॉडी हाइड्रेट रहेगी और एनर्जी बनी रहेगी।

शकरकंद, गाजर, खीरा और टमाटर जैसे हल्के और ठंडक देने वाले सब्जियों का सेवन करें।

एनर्जी के लिए ड्राई फ्रूट्स जैसे बादाम, काजू, अखरोट, खजूर, मूंगफली भी खा सकते हैं।

व्रत का खाना सेंधा नमक, जीरा, साबुत मसाले, गुड़, अमचूर, लाल मिर्च से तैयार करें।

तेल के तौर पर मूंगफली का तेल, घी या सनफ्लावर ऑयल का इस्तेमाल करें।

व्रत में क्या न खाएं?

गुरुवार व्रत के दौरान कुछ चीजों से पूरी तरह परहेज करना जरूरी होता है:

प्याज और लहसुन का सेवन न करें, ये व्रत के नियमों के खिलाफ माने जाते हैं।

गेहूं का आटा, बेसन, सूजी, मैदा और चावल जैसे अनाज व्रत में नहीं खाए जाते।

व्रत के दिन सामान्य नमक की जगह सिर्फ सेंधा नमक का इस्तेमाल करें।

चाय, कॉफी और सॉफ्ट ड्रिंक्स से भी दूर रहें, खासकर अगर व्रत पूरी तरह फलाहार का है।

व्रत के दौरान शराब, सिगरेट या किसी भी तरह का नशा बिल्कुल न करें।

ॐ नमः शिवाय मंत्र का जप क्यों है खास? जानिए इसके आध्यात्मिक लाभ और जीवन में आने वाले बदलाव

पूजा से जुड़ी खास बातें

इस दिन केले के पेड़ की पूजा जरूर करें। केले को भगवान विष्णु को चढ़ाएं, लेकिन खुद न खाएं।

पीले फूल, पीले वस्त्र और पीले रंग की मिठाई का उपयोग करें। यह भगवान विष्णु को प्रिय होता है।

कोशिश करें कि पूरे दिन सात्त्विक और शांत मन से रहें और भगवान का नाम लेते रहें।

धराली में फिर मलबे में समा गए कल्प केदार जहां खीर गंगा करती थीं जलाभिषेक

उत्तराखंड में उत्तरकाशी जिले के धराली गांव में बादल फटने से भारी तबाही हुई है। इस प्राकृतिक आपदा में अब तक 4 लोगों के मरने की खबर है। अचानक बादल फटने से खीर गंगा नदी में पानी का जल स्तर इतना बढ़ा कि उसने तबाही मचा दी। इसके मलबे में यहां का प्रसिद्ध कल्प केदार मंदिर दब गया। इस मंदिर में केदारनाथ धाम की झलक मिलती है। अपदा से पहले यहां हर समय खीर गंगा भगवान शिव का जलाभिषेक करती थीं।

केदारनाथ धाम जैसा कल्प केदार मंदिर

धराली के कल्प केदार मंदिर की बनावट केदारनाथ धाम मंदिर के जैसे ही है। इस मंदिर को कत्यूर शैली में बनाया गया है। यह प्राचीन वास्तुकला और समृद्ध इतिहास का प्रतीक है। बताया जाता है कि कल्प केदार मंदिर के गर्भगृह का शिवलिंग नंदी की पीठ के आकार का है। यह शिवलिंग ठीक वैसे ही है, जैसे केदारनाथ मंदिर का शिवलिंग है। मंदिर के बाहर के पत्थरों पर नक्काशी की गई है, जो काफी आकर्षक है।

हर समय खीर गंगा करतीं थीं जलाभिषेक

बताया जाता है कि कल्प केदार मंदिर जमीन की सतह से नीचे है। भगवान कल्प केदार की पूजा के लिए भक्तों को नीचे जाना पड़ता था। गर्भगृह में जो शिवलिंग स्थापित है, उस पर हर समय खीर गंगा का पानी गिरता रहता था, जैसे मानो कि खीर गंगा स्वयं भगवान शिव का जलाभिषेक कर रही हों। खीर गंगा के जल को आने के लिए एक मार्ग भी बनाया गया था।

1945 में मिला यह प्राचीन शिव मंदिर

भगवान शिव का यह कल्प केदार मंदिर कई सालों तक जमीन के नीचे ही दबा था। हो सकता है कि पहले आई आपदाओं के मलबे में यह दबा गया हो। 1945 में यहां पर कई फीट नीचे खुदाई हुई तो यह प्रचीन शिव मंदिर मिला।

मंदिर का आधा हिस्सा जमीन में

जीमन की सतह से 12 फीट नीचे तक खुदाई की गई थी। इस मंदिर का आधा हिस्सा फिर भी जमीन में ही था। इस मंदिर में भगवान शिव की सफेद रंग की मूर्ति है, उनके आसपास नंदी, शेर, शिवलिंग आदि भी हैं। लोक मान्यताओं के अनुसार, यह एक पांडवकालीन शिव मंदिर है, जो कभी 240 मंदिरों के समूह में शामिल था। बाद में ये सभी प्राकृतिक आपदाओं की वजह से भौगोलिक बदलाव में लुप्त हो गए। कल्प केदार मंदिर के पास के अवशेष 17वीं सदी के बताए जाते हैं। कल्प केदार मंदिर पुरातत्व विभाग की सूची में शामिल है।

कहां हैं कल्प केदार मंदिर

कल्प केदार मंदिर धराली गांव में है, जो उत्तरकाशी जिला मुख्यालय से 75 किलोमीटर दूर गंगोत्री हाइवे पर बसा है। यह गंगोत्री से 20 किलोमीटर की दूरी पर है।

राखी बांधने से पहले बहन कर लें ये काम, शुभ होगा दोनों का साल

सावन पूर्णिमा की तारीख सनातन धर्म में बहुत खास महत्व रखती है क्योंकि इस दिन पूरे देश भर में रक्षाबंधन का त्योहार मनाया जाता है। रक्षाबंधन के दिन सभी बहनें अपने भाई की लंबी उम्र की कामना के लिए कलाई पर राखी बांधती हैं और भाई बहन की रक्षा का वचन देता है। रक्षाबंधन भाई-बहन के पवित्र प्यार का भी प्रतीक है।

सावन माह की पूर्णिमा तारीख के दिन पूरे देश भर में रक्षाबंधन का त्योहार मनाया जाता है। इस साल 09 अगस्त को रक्षाबंधन का त्योहार मनाया जाएगा। रक्षाबंधन के दिन इस साल बहुत शुभ योग बन रहा है क्योंकि इस साल भद्रा का साया नहीं रहेगा।

क्योंकि भद्रा के समय राखी नहीं बांधना चाहिए, अशुभ होता

है। वहीं रक्षाबंधन के दिन राखी बांधने से पहले यह काम जरूर कर लेना चाहिए, इससे भाई-बहन के जीवन में सुख-समृद्धि बढ़ती है और रिश्ते में मिठास आती है।

राखी बांधने से पहले कर ले यह काम

रक्षाबंधन के दिन बहन अपने भाई को राखी बांधती है। वहीं राखी बांधने से पहले बहन एक दिन पहले शाम के समय घर के किसी देवी-देवता, खासकर भगवान गणेश के सामने राखी को रख दे और अगले दिन यानी रक्षाबंधन के दिन बहन सुबह स्नान करके भगवान गणेश या घर के देवी-देवता की पूजा करके ही भाई को राखी बांधे। इसके साथ ही राखी बांधते समय भाई को केसर का तिलक लगाए। इससे गुरु ग्रह मजबूत होंगे और जीवन में अच्छी ऊर्जा का संचार होगा।

झारखंड का अनोखा शिवलिंग, यहां एक बार में 1008 बार हो जाता है जलाभिषेक

सावन माह के दौरान शिव भक्त सैकड़ों किलोमीटर की कांवर पदयात्रा कर शिवलिंग पर जलाभिषेक करते हैं। झारखंड के चतरा जिले के इटखोरी में मां भद्रकाली मंदिर परिसर में बना सहस्त्र शिवलिंग सावन माह में शिवभक्तों की आस्था का प्रमुख केंद्र बन गया है। यह धार्मिक स्थल अपनी अद्भुत विशेषताओं के कारण पूरे देश में प्रसिद्ध है। जहां एक साथ 1008 शिवलिंगों पर जल चढ़ाने का दुर्लभ सौभाग्य भक्तों को प्राप्त होता है।

1008 शिवलिंग पर जलाभिषेक

मंदिर परिसर में मौजूद यह 5 फीट ऊंचा और 4 फीट गोलाई वाला शिवलिंग काले पत्थर से निर्मित है। शिवलिंग के चारों तरफ 1008 छोटे-छोटे शिवलिंग समाहित हैं। शिवलिंग के ऊपर लोगों द्वारा जलाभिषेक करने पर जल एक-एक कर 1008 शिवलिंगों पर अर्पित होता है, जो अपने आप में एक चमत्कारिक दृश्य है। सावन में देवघर जाने वाले या आने वाले कांवरिया यहां जल अर्पित करना नहीं भूलते हैं। यही वजह है कि इस पावन महीने में यहां भक्तों की भारी भीड़ उमड़ती है।

दसवीं शताब्दी में निर्माण का उल्लेख

मंदिर के पुजारी उमेश पांडेय के अनुसार इटखोरी का सहस्त्र शिवलिंगम 10वीं शताब्दी का है। मंदिर परिसर के आसपास उत्खनन से प्राप्त शिलालेखों और ताम्र पत्रों के अनुसार इस मंदिर का निर्माण पाल वंश के शासक महेंद्र पाल ने 988 ईस्वी से 1038 ईस्वी के बीच कराया था। इटखोरी के संग्रहालय में पाल वंश काल के अवशेष मौजूद हैं, जिनमें सनातन, बौद्ध और जैन धर्म की प्रतिमाएं शामिल हैं। ये अवशेष 9वीं से 12वीं सदी के हैं, जो इस क्षेत्र की प्राचीनता को दर्शाते हैं।

जब माता-पिता और गुरु हमारी आलोचना करते हैं तो इसका अर्थ है कि वे हमें सुधारना चाहते हैं

माता-पिता और गुरु को ईश्वर का रूप माना जाता है। इनके लिए आदर, श्रद्धा का भाव रखना चाहिए। शास्त्रों में कहा गया है- मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव। इसका अर्थ है माता-पिता, गुरु और आचार्य ये सब देवताओं के समान हैं। जीवन के विभिन्न पड़ावों पर माता-पिता और गुरु हमारा मार्गदर्शन करते हैं और हमारी कमियों को भी उजागर करते हैं। ये लोग जब हमारी आलोचना करते हैं तो इसका अर्थ है कि वे हममें सुधार चाहते हैं।

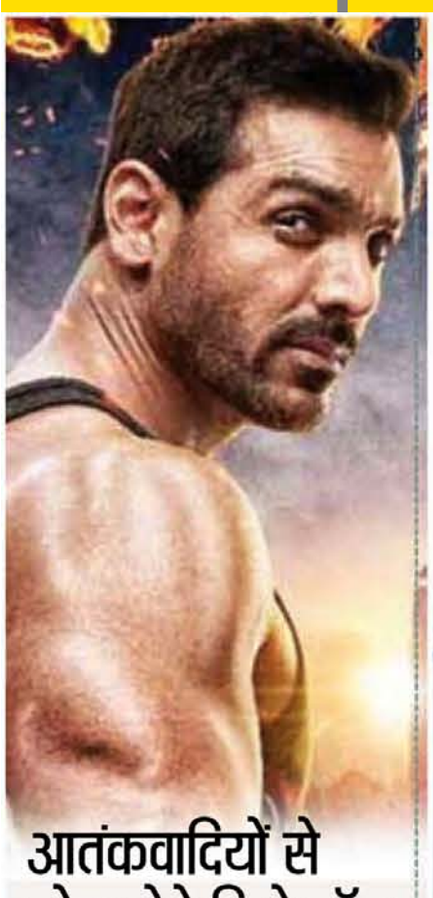

आतंकवादियों से लोहा लेते दिखे जॉन अब्राहम, तेहरान का ट्रेलर रिलीज

अगस्त के महीने में कई दिलचस्प फिल्में थिएटर्स में रिलीज होने जा रही हैं। वहीं, ओटीटी पर भी बहार रहेगी। इस महीने ओटीटी पर रिलीज होने वाली फिल्मों में जॉन अब्राहम की तेहरान का नाम भी शामिल है। इसी फिल्म का 01 अगस्त को ट्रेलर रिलीज किया गया है, जो सस्पेंस और थ्रिल से भरपूर है। फिल्म तेहरान 14 अगस्त को ओटीटी पर रिलीज होगी। इसे जी5 पर देखा जा सकेगा। जी स्टूडियोज के यूट्यूब चैनल पर फिल्म का ट्रेलर रिलीज किया गया है। जॉन अब्राहम आतंकवादियों के मंसूबों को नाकाम करते दिख रहे हैं। वे पुलिस ऑफिसर की भूमिका में नजर आएंगे। अभिनेता एक्शन अवतार में दिख रहे हैं।

फिल्म तेहरान को सच्ची घटना पर आधारित बताया जा रहा है। ट्रेलर की शुरुआत में आवाज आती है, ये इंटरनेशनल मैटर है, तीन देशों में ब्लास्ट हुआ है। ये आतंकवादियों का काम है और हमें इन्हें बेनकाब करना होगा। कहां है राजीव कुमार? इसके बाद जॉन अब्राहम की झलक दिखाई देती है। पुलिस ऑफिसर वाले तेवर के साथ वे एक्शन अवतार में नजर आए हैं।

ट्रेलर में जॉन के कई दमदार डायलॉग ट्रेलर में सुनाई देते हैं। एक जगह जॉन कहते हैं, जब एक सोल्जर दूसरे सोल्जर को मारता है तो बात देश को होती है, लेकिन जब एक आतंकवादी किसी मासूम की जान लेता है तो बात बहुत पर्सनल हो जाती है। एक अन्य डायलॉग है, जब तक बम लगाने वाले हाथ काट नहीं दिए जाते, तब तक इंडिया को कोई सीरियसली नहीं लेगा। फिल्म का निर्देशन अरुण गोपालन ने किया है। इसे दिनेश विजन ने प्रोड्यूसर किया है। ट्रेलर को दर्शकों की सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है। वहीं कुछ दर्शक लिख रहे हैं, यह फिल्म थिएटर्स में रिलीज होनी चाहिए थी।

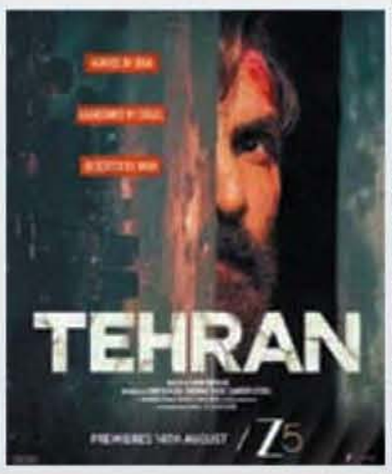

नेशनल अवार्ड मिलने पर बेहद सम्मानित महसूस कर रही हूँ

प्रतिभाशाली अभिनेत्री सान्या मल्होत्रा ने अपनी प्रशंसित फिल्म कटहल- अ जैकफ्रूट मिस्ट्री को इस साल के राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों में सर्वश्रेष्ठ हिंदी फिल्म का खिताब दिलाकर अपने नाम एक और उपलब्धि दर्ज कर लिया है। अपने बहुमुखी अभिनय और अनोखी पटकथाओं को चुनने की कला के लिए जानी जाने वाली सान्या एक बार फिर ऐसी फिल्मों का हिस्सा बनी हैं जो अपनी विषयवस्तु और कलात्मक प्रस्तुति के लिए सराही गई हैं। सान्या मल्होत्रा की व्यंग्यात्मक कॉमेडी फिल्म कटहल- अ जैकफ्रूट मिस्ट्री, जिसे इसकी ताजगी भरी कहानी, सामाजिक प्रासंगिकता और अनोखे हास्य के लिए प्रशंसित है, फिल्म में उन्होंने एक जुझारू पुलिस अफसर की भूमिका निभाई, जो दो कीमती कटहलों की चोरी की जांच करती है। इस बड़ी जीत के बाद सान्या ने अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए कहा- मैं बेहद सम्मानित महसूस कर रही हूँ कि कटहल को सर्वश्रेष्ठ हिंदी फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है। यह कहानी मेरे लिए बेहद खास रही है, और मैं गुनीत मोंगा, अचिन जैन और पूरी टीम की आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे इतना अनोखा किरदार दिया। यह फिल्म व्यंग्य और संवेदनशीलता के माध्यम से समाज की महत्वपूर्ण सच्चाइयों को दर्शाती है, और मुझे खुशी है कि यह दर्शकों के साथ जुड़ पाई। इस सम्मान से मुझे और भी अधिक सार्थक सिनेमा चुनने की प्रेरणा मिलती है। जूरी और कटहल को समर्थन देने वाले सभी लोगों को दिल से धन्यवाद।

इस खुशी में और इज़ाफ़ा करते हुए, विक्की कौशल के साथ सान्या मल्होत्रा की मुख्य भूमिका वाली फिल्म सैम बहादुर को कई पुरस्कारों से नवाज़ा गया, जिनमें सर्वश्रेष्ठ मेकअप, सर्वश्रेष्ठ कॉस्ट्यूम डिज़ाइन और राष्ट्रीय, सामाजिक एवं पर्यावरणीय मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म शामिल हैं। भारत के महान फील्ड मार्शल सैम मानेकशॉ पर आधारित इस बायोपिक को उसकी प्रामाणिकता और देशभक्ति व नेतृत्व की प्रेरणादायक कहानी के लिए खूब सराहा गया। सान्या की सफलता यहीं नहीं रुकी — शाहरुख़ ख़ान अभिनीत फिल्म जवान, जिसमें सान्या एक अहम भूमिका में थीं, ने भी शीर्ष सम्मान अर्जित किया, जो उनकी उस सिनेमा से जुड़ाव को दर्शाता है जो न केवल प्रभावशाली बल्कि व्यावसायिक रूप से भी सफल हैं। सान्या मल्होत्रा के लिए ऐसे आलोचनात्मक और व्यावसायिक रूप से सफल प्रोजेक्ट्स का हिस्सा बनना यह साबित करता है कि वे एक ऐसी अभिनेत्री हैं जो हर किरदार में गहराई और विश्वसनीयता लाती हैं। कटहल ने उनके हास्य अभिनय और पात्र-प्रधान भूमिकाओं की प्रतिभा को उजागर किया है, वहीं सैम बहादुर और जवान जैसी फिल्मों ने उन्हें समुच्चय आधारित कहानियों में अपनी बहुमुखी प्रतिभा दिखाने का मौका दिया है। सान्या अब बॉलीवुड की उन चुनिंदा और भरोसेमंद कलाकारों में शुमार हो चुकी हैं, जो दर्शकों और समीक्षकों दोनों का दिल जीतती हैं।

एल्विश यादव के हाथ लगा एक और रियलिटी शो

इस वक्त एल्विश यादव के करियर के सितारे बुलंदियों पर हैं। वह जिस भी चीज में हाथ डाल रहे हैं, वहां से विनर बनकर निकल रहे हैं। बिग बॉस ओटीटी 2 और रोडीज के बाद एल्विश यादव ने लाफ्टर शेफ्स 2 जीता, और अब वह एक्टिंग डेब्यू करने जा रहे हैं। एल्विश यादव जल्द ही एक वेब सीरीज में नजर आएंगे, जिसकी शूटिंग भोपाल में चल रही है। एल्विश ने शूटिंग भी शुरू कर दी है। एक सोर्स ने बताया कि एल्विश यादव काफी समय से एक्टिंग की दुनिया में उतरने का मन बना रहे थे, और यह प्रोजेक्ट उनके विजन के हिसाब से एकदम परफेक्ट है। एल्विश अभी भोपाल में शूटिंग कर रहे हैं, और बेहद एक्साइटेड हैं।

एल्विश यादव ने लगातार जीते ये रियलिटी शोज, बढ़ती गई पॉपुलैरिटी

एल्विश यादव एक पॉपुलर यूट्यूबर रहे हैं, और वहीं से उन्हें बिग बॉस ओटीटी में जाने का मौका मिला था। उन्होंने बतौर वाइल्ड कार्ड शो में एंट्री की थी, और विनर बनकर इतिहास रच दिया था। इसके बाद एल्विश यादव की पॉपुलैरिटी और बढ़ गई। उन्होंने कई म्यूजिक वीडियोज किए और MTV Roadies XX में नजर आए। वह इस शो के भी विनर बने, और हाल ही करण कुंद्रा के साथ लाफ्टर शेफ्स- एंटरटेनमेंट अनलिमिटेड जीता।

एल्विश यादव की कमाई और नेट वर्थ, लाफ्टर शेफ्स 2 से इनकम

एल्विश यादव की कमाई और नेट वर्थ की बात करें, तो वह यूट्यूब के अलावा म्यूजिक वीडियोज और रियलिटी शोज जीतकर मोटी कमाई कर रहे हैं। लाफ्टर शेफ्स 2 में एल्विश को हर एपिसोड के लिए 2 लाख रुपये मिले। वह पूरे 44 एपिसोड्स में नजर आए। इस हिसाब से देखें तो एल्विश ने इस शो से 88 लाख रुपये कमाए। इसके अलावा उन्होंने और करण कुंद्रा ने प्राइज मनी भी जीती, जिसका खुलासा नहीं हुआ है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, एल्विश यादव की नेट वर्थ 50 करोड़ रुपये के आसपास बताई जाती है।

एल्विश यादव को मिला एक और शो, जियो हॉटस्टार पर शुरू

एल्विश यादव का करियर एकदम चरम पर है। उनके हाथ एक और नया रियलिटी शो लगा है, जिसे ओटीटी प्लेटफॉर्म जियो हॉटस्टार पर स्ट्रीम किया जा रहा है। इसका नाम है अड्डा एक्स्ट्रीम बैटल। वह इसे होस्ट कर रहे हैं और हाल ही इसका प्रोमो भी रिलीज किया गया, जिसे एल्विश यादव ने भी अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर किया था।

सैम बहादुर को तीन सम्मान मिलने पर फातिमा सना शेख गदगद

अभिनेत्री फातिमा सना शेख, जो अपनी दमदार भूमिकाओं के लिए जानी जाती हैं, 71वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों में अपनी फिल्म सैम बहादुर को मिली सफलता से बेहद उत्साहित हैं। इस फिल्म ने तीन प्रतिष्ठित पुरस्कार जीते हैं - राष्ट्रीय, सामाजिक और पर्यावरणीय मूल्यों पर आधारित सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म, सर्वश्रेष्ठ मेकअप और सर्वश्रेष्ठ कॉस्ट्यूम डिज़ाइन। इस बड़ी उपलब्धि पर फातिमा ने पूरी टीम को बधाई दी और इस यादगार सफर का हिस्सा बनने पर खुशी जाहिर की। फातिमा ने एक भावुक बयान में कहा, सैम बहादुर की टीम को तीन शानदार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीतने पर ढेरों बधाई!! यह वास्तव में मेरे लिए एक गर्व का क्षण है। इस फिल्म का हिस्सा बनकर और श्रीमती इंदिरा गांधी का किरदार निभाकर मैं बेहद खुश हूं। उन्होंने फिल्म की निर्देशक मेघना गुलज़ार की भी सराहना करते हुए कहा, मेघना गुलज़ार के साथ काम करना एक सपना सच होने जैसा था, और यह मेरे लिए एक बेहद खास अनुभव रहा। मेघना गुलज़ार द्वारा निर्देशित सैम बहादुर भारत के पहले फील्ड मार्शल सैम मानेकशॉ के जीवन पर आधारित है। फातिमा ने इस फिल्म में पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की भूमिका निभाई थी। उनके सशक्त और विश्वसनीय अभिनय को दर्शकों और समीक्षकों दोनों से खूब सराहना मिली थी, जिसने एक बार फिर उनकी अभिनय क्षमता और बहुमुखी प्रतिभा को साबित किया।

पाकिस्तान से जुड़े इवेंट में शामिल होंगे कार्तिक आर्यन? टीम ने दी सफाई

हाल ही में फेडरेशन ऑफ वेस्टर्न इंडिया सिने एम्प्लॉइज ने कार्तिक आर्यन को एक ऑफिशियल लेटर लिखा, जिसमें बताया कि वह ह्यूस्टन में होने वाले एक इवेंट में भाग ले रहे हैं, जिसको करवाने वाला शख्स एक पाकिस्तानी है। इस बात का पता चलने पर कार्तिक आर्यन की टीम ने अब सफाई दी है।

कार्तिक आर्यन की टीम ने सफाई देते हुए जवाब दिया है, 'कार्तिक आर्यन किसी भी तरह से उस इवेंट से जुड़े नहीं हैं। उन्होंने इवेंट में भाग लेने की कभी कोई ऑफिशियल अनाउंसमेंट नहीं की है। हमने इवेंट कराने वाले लोगों से कॉन्टैक्ट किया है और कार्तिक का नाम, तस्वीरें प्रमोशन मटीरियल से हटाने का अनुरोध किया है।'

फेडरेशन ऑफ वेस्टर्न इंडिया सिने एम्प्लॉइज ने एक लेटर कार्तिक आर्यन को लिखा। इसमें बताया गया कि कार्तिक आर्यन 15 अगस्त 2025 को ह्यूस्टन, अमेरिका में आयोजित होने वाले आजादी के एक उत्सव भाग ले रहे हैं। कार्तिक आर्यन इस इवेंट में चीफ गेस्ट हैं। लेकिन यह इवेंट एक पाकिस्तानी रेस्तरां मालिक ने आयोजित किया है। फेडरेशन का यह भी मानना है कि इवेंट कराने वाले लोगों को लेकर कार्तिक आर्यन को जानकारी नहीं रही होगी। ऐसे में कार्तिक आर्यन से रिक्वेस्ट की गई कि वह इस इवेंट में शामिल ना हों।

इन दिनों कार्तिक आर्यन एक फिल्म 'तू मेरी मैं तेरा मैं तेरा तू मेरी' की शूटिंग कर रहे हैं, इसे करण जौहर प्रोड्यूस कर रहे हैं। कार्तिक, करण जौहर के प्रोडक्शन की एक और फिल्म कर रहे हैं, जिसमें वह इच्छाधारी नाग बनेंगे। इस फिल्म का नाम 'नागजिला' होगा।

छोरियां चली गांव के जरिए आज की पीढ़ी को दिखाना चाहता हूं देश की खूबसूरती

अभिनेता और होस्ट रणविजय सिंह अपकमिंग रियलिटी शो छोरियां चली गांव में नजर आएंगे। उन्होंने बताया कि इस शो के जरिए वह वर्तमान पीढ़ी, खासकर अपने बच्चों को भारत के सादे जीवन और गांवों की खूबसूरती से रूबरू कराना चाहते हैं। रणविजय के लिए यह शो बेहद खास है, क्योंकि उनकी बचपन की यादें पंजाब के गांव से जुड़ी हैं। रणविजय ने बताया, बचपन में मैं हर गर्मी की छुट्टियों में अपने दादा-दादी के पास गांव जाता था। मुर्गे की आवाज के साथ सुबह उठना, खेतों में नंगे पांव दौड़ना, हैंडपंप से पानी निकालना, गाय के तबेले से दूध लाना और खेतों में मदद करना ये सब मेरी दिनचर्या का हिस्सा था। उन्होंने कहा कि इन छोटी-छोटी चीजों को परिवार के सामने गर्व से दिखाना उन्हें अच्छा लगता था। उन्होंने आगे कहा, आज की पीढ़ी को ऐसी जिंदगी का अनुभव नहीं मिलता। मैं चाहता हूं कि छोरियां चली गांव के जरिए मेरे बच्चे और युवा पीढ़ी असली भारत को देखें, जहां लोग सादगी से, लेकिन शांति से जीते हैं। रणविजय का मानना है कि यह शो न केवल मनोरंजन करेगा, बल्कि दर्शकों को गांव की सादगी और मूल्यों से जोड़ेगा। वह यह भी चाहते हैं कि उनके बच्चे पानी और भोजन की कीमत समझें और अपने हाथों से काम करने की खुशी को जानें।

छोरियां चली गांव एक अनोखा नॉन-फिक्शन शो है। इस शो में 11 आत्मनिर्भर लड़कियों को 60 दिनों के लिए एक गांव में भेजा जाएगा। वहां वे गांव के रहन-सहन, तौर-तरीकों और परंपराओं के बीच रहेंगी। ये लड़कियां गांव के माहौल में खुद को ढालने की कोशिश करेंगी। उन्हें खाना बनाना, पशुओं की देखभाल करना, खेत में काम करना आदि गांव में होने वाले सभी काम करने होंगे। इस सफर में उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा, जिससे उनकी असली ताकत और जज्बा सामने आएगा। इस शो का मकसद शहर की लड़कियों की ताकत, जज्बा और माहौल के हिसाब से खुद को ढालने की क्षमता को दिखाना है। छोरियां चली गांव जल्द ही जीटीवी पर प्रसारित होगा।

12वीं फेल के लिए बेस्ट एक्टर का नेशनल अवॉर्ड जीतने पर बोले विक्रांत

फिल्म '12वीं फेल' की कहानी हाशिए पर खड़े उन लोगों की थी, जो मेहनत के दम पर, पढ़-लिखकर यूपीएससी जैसा एग्जाम पास करते हैं। इस संघर्ष को फिल्म में विक्रांत मैसी ने जीवंत कर दिया था। कई बच्चों को इस फिल्म ने मोटिवेट भी किया। अब इसी फिल्म के लिए विक्रांत मैसी को बेस्ट एक्टर का नेशनल अवॉर्ड मिला है। इस अवॉर्ड को पाकर विक्रांत कैसा महसूस कर रहे हैं? जानिए।

20 साल पुराना सपना सच हो गया

बेस्ट एक्टर का नेशनल अवॉर्ड जीतने पर विक्रांत मैसी कहते हैं, 'मैं सूचना और प्रसारण मंत्रालय और 71वें नेशनल फिल्म अवॉर्ड्स की ज्यूरी का शुक्रिया अदा करता हूं। उन्होंने मेरे काम को इस सम्मान के लायक समझा। मैं विधु विनोद चोपड़ा जी का भी शुक्रिया अदा करता हूं, जिन्होंने मुझे फिल्म में अभिनय करने का मौका दिया। आज मेरा 20 साल पुराना सपना सच हो गया है।' विक्रांत मैसी आगे कहते हैं, 'मैं दर्शकों का दिल से शुक्रिया करता हूं, जिन्होंने मेरी एक्टिंग को पसंद किया, फिल्म '12वीं फेल' को इतने प्यार से आगे बढ़ाया। मेरे लिए खुशी की बात है कि मैं अपना पहला नेशनल अवॉर्ड शाहरुख खान जैसे बड़े कलाकार के साथ शेयर कर रहा हूं।'

विधायक पंकज सिंह के जनसंवाद से गांवों में लगी विकास की झड़ी

नोएडा (चेतना मंच)। नोएडा विधायक एवं भाजपा उत्तर प्रदेश के प्रदेश उपाध्यक्ष पंकज सिंह ने आज आगाहपुर, सदरपुर और बरौला गांवों में जन संवाद कर ग्रामीणों की समस्याएं सुनीं और सरकार द्वारा चलाए जा रहे विकास कार्यों की जानकारी दी।

पंकज सिंह ने बताया कि बरौला में नई सीवर लाइन बिछाई जा रही है जो वर्तमान में जोड़ दिए गए आधे से अधिक क्षेत्र की जनसंख्या की जरूरतों को पूरा करेगी। इसके साथ ही नई सड़कों का निर्माण और एक बरात घर का नवीनीकरण किया जाएगा, जबकि एक अन्य पुराने बरात घर को तोड़कर आधुनिक सुविधाओं से युक्त नया भवन बनाया जाएगा। विधायक पंकज सिंह ने सदरपुर, आगाहपुर में भी सड़क और सीवर की समस्याओं के त्वरित निस्तारण के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया।

उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में जनता ही सर्वोपरी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भी यही मानना है कि सरकार के कार्यों को जनता तक पहुंचाना भी हमारी ही जिम्मेदारी है। पूर्ववर्ती सपा-बसपा सरकारों की भ्रष्ट नीतियों की वजह से जो समस्याएं पैदा हुईं, उन्हें लेकर भी उन्होंने कहा कि राज्य सरकार लगातार कार्य कर रही है और अब तक अनेक जटिल समस्याओं का समाधान किया जा चुका है। बाकी समस्याओं पर भी तेजी से काम चल रहा है।

पंकज सिंह ने अधिकारियों को भी स्पष्ट संदेश दिया कि गलत को होने नहीं दूंगा और सही को रुकने नहीं दूंगा। अब जन समस्याओं के निस्तारण में देरी नहीं चलेगी। अधिकारीगण समाधान की दिशा में त्वरित गति से कार्य करें।

कार्यक्रम में भाजपा नोएडा जिला अध्यक्ष महेश चौहान, मंडल अध्यक्ष प्रदीप चौहान, नीराज चौधरी, अमित त्यागी, सतीश चौहान, बी.सी.प्रधान, विनोद पंडित, सहदेव चौहान, नरेंद्र प्रधान, इंद्राज खटाना, मास्टर ब्रह्म सिंह, गणेश जाटव, डिंपल आनंद, महेश अवाना, गायक ब्रह्मपाल नागर, सतपाल प्रधान, करतार चौहान, मास्टर जसवंत सिंह, पेमी नागर, उमेश त्यागी,ओमवीर अवाना, धर्मेंद्र चौहान, विपुल शर्मा, अर्पित मिश्रा, बबलू यादव, अशोक मिश्रा तथा प्राधिकरण के अधिकारी मौजूद रहे।

सीबीआई ने प्राधिकरण में खंगाली फाइलें, प्रोजेक्टों का किया निरीक्षण

नोएडा (चेतना मंच)। कोर्ट की ओर से जांच का आदेश आने के बाद बुधवार को सीबीआई की एक टीम नोएडा प्राधिकरण पहुंच कर बिल्डरों से जुडी फाइलों को खंगाला। पैसे जमा करने के बाद भी लोगों को घर मुहैया नहीं कराने पर सुप्रीम कोर्ट ने सीबीआई को 22 बिल्डरों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर जांच रिपोर्ट पेश करने को कहा है। इसी के तहत सीबीआई ने नोएडा प्राधिकरण के दफ्तर से इन बिल्डरों की फाइलों की जांच की। सीबीआई की टीम ने प्रोजेक्टों का मौके पर जाकर मुवायना किया।

नोएडा में सबवेंशन स्कीम के तहत सीबीआई ने 22 बिल्डर के खिलाफ एफआईआर दर्ज की थी। इसमें 10 बिल्डर नोएडा प्राधिकरण से जुड़े है। बुधवार को सीबीआई की टीम प्राधिकरण पहुंची। यहां 10 बिल्डर की कंस्ट्रक्शन से जुड़ी जानकारी ली गई। इनके कंस्ट्रक्शन स्टेटस आवंटन और बकाया से संबंधित जानकारी ली गई। साइट पर कितना के ओसी, सीसी जारी किया गया। प्राधिकरण में करीब डेढ़ घंटे के आसपास टीम रही। इसके बाद सीबीआई ने साइट का स्थलीय निरीक्षण भी किया।

दोपहर करीब डेढ़ बजे के आसपास सीबीआई की टीम सेक्टर-6 स्थित नोएडा प्राधिकरण के कार्यालय पहुंचे। वे ग्रुप हाउसिंग विभाग गए वहां अधिकारियों ने उन्होंने 10 बिल्डर जिसमें सुपरटेक के तीन साइट, लॉजिक्स समेत अन्य बिल्डरों के कंस्ट्रक्शन स्टेटस से संबंधित जानकारी जुटाई। इसे नोटिफाइड किया और स्थलीय निरीक्षण करने चले गए। बता दे सुप्रीम कोर्ट के आदेश के तहत सीबीआई सबवेंशन स्कीम के तहत किए गए घोटाले की जांच कर रही है।

शर्तों के तहत फ्लैट का कब्जा मिलने तक बिल्डर को ही ईएमआई का भुगतान करना था, लेकिन कुछ समय बाद बिल्डरों ने ईएमआई देनी बंद कर दी और खरीदारों को फ्लैट भी नहीं दिए। इससे खरीदारों पर ईएमआई का बोझ आ गया और बड़ी संख्या में खरीदार डिफॉल्टर हो गए। इनमें से कई खरीदार सुप्रीम कोर्ट चले गए। सुप्रीम कोर्ट ने पूरे मामले की सीबीआई जांच के आदेश दिए।

अयंगर योग ने मनाया स्थापना दिवस, पुस्तक का विमोचन

नोएडा (चेतना मंच)। अयंगर योग ने अपना 9वां स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर 'वॉच एंड ड्रॉ' पुस्तक का विमोचन भी किया गया।

इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण वॉच एन डू पुस्तक का लोकार्पण था - यह पुस्तक ASMYI के प्रमुख पाठ्यक्रम के 40 घंटे के विस्तृत प्रदर्शनों की एक बाइबल पुस्तिका है- वॉच एन डू, जिसका आधार आसनों के चिकित्सीय अनुप्रयोग पर दशकों का शोध है।

संजय कुमार लाल, आयुक्त, भारतीय राजस्व सेवा, अहमदाबाद ने एनईए सभागार में इस पुस्तक का लोकार्पण किया।

विपिन मल्हान (अध्यक्ष, एनईए), स्वामी परिवर्तन (पीपल बाबा), कैप्टन विकास गुप्ता (अध्यक्ष, कृषि अनुसंधान परिषद, उत्तर प्रदेश), पवन नायडू (वरिष्ठ भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं शिक्षक) के कुशल सानिध्य में इस पुस्तक का लोकार्पण किया गया।

18-80+ आयु वर्ग के लोगों ने योग के कई प्रदर्शन किए। प्रदर्शन में इस्तेमाल की जाने वाली चिकित्सीय तकनीकों और विभिन्न उपकरणों का प्रदर्शन बिल्कुल नया था।

एमिटी इंटरनेशनल स्कूल नोएडा व गुरूग्राम ने जीता "जीटी अवार्ड 2025"

नोएडा (चेतना मंच)। द ग्लोबल टाइम्स (एमिटी का अखबार) द्वारा एमिटी इंटरनेशनल स्कूल एवं एमिटी ग्लोबल स्कूल के छात्रों के लिए 15वें द ग्लोबल टाइम्स अवार्ड 2024 - 25 समारोह का आयोजन एमिटी विश्वविद्यालय में किया गया जिसमे ''द ग्लोबल टाइम्स मेकिंग ए न्यूजपेपर कॉस्टेस्ट'' में विजयी एमिटी विद्यालय के युवा छात्रों (द ग्लोबल टाइम्स के पत्रकारों) सहित एमिटी विद्यालयों को पुरस्कृत किया गया।

द ग्लोबल टाइम्स अवार्ड 2024-25 समारोह में द ग्लोबल टाइम्स मेकिंग न्यूजपेपर कांटेस्ट प्रतियोगिता के अंतर्गत एमिटी इंटरनेशनल स्कूल नोएडा और एमिटी इंटरनेशनल स्कूल सेक्टर 46 गुरूग्राम को बेस्ट न्यूजपेपर की प्रथम विजेता की ट्राफी प्रदान की गई। एमिटी इंटरनेशनल स्कूल मयूर विहार ने द्वितीय पुरस्कार और एमिटी इंटरनेशनल स्कूल सेक्टर 01 वसुंधरा ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। एमिटी इंटरनेशनल स्कूल वीकेसी लखनउ को ज्युरी स्पेशल मेंशन अवार्ड से नवाजा गया। इसके अतिरिक्त छात्रों को सर्वश्रेष्ठ शीर्ष कहानी, सर्वश्रेष्ठ साक्षात्कार, सर्वश्रेष्ठ आत्मकथा, सर्वश्रेष्ठ परिप्रेक्ष्य कहानी, सर्वश्रेष्ठ काल्पनिक कहानी, सर्वश्रेष्ठ कविता, समाचारों की सर्वश्रेष्ठ एबीसी, सर्वश्रेष्ठ ग्राउंड रिपोर्टिंग, सर्वश्रेष्ठ हास्य कहानी, जीटी

पॉपुलर चॉइस अवार्ड - सर्वश्रेष्ठ शीर्षक, और 5 डिजाइन श्रेणियाँ - सर्वश्रेष्ठ ग्राफिक/इमेजिंग, सर्वश्रेष्ठ चित्रण, सर्वश्रेष्ठ फोटोग्राफ, सर्वश्रेष्ठ विज्ञान विज्ञापन, सर्वश्रेष्ठ शैक्षिक पोस्टर आदि श्रेणियों में पुरस्कृत किया गया।

इसके अतिरिक्त 2024 बैच के 8 पूर्व छात्रों को जीटी संपादकीय बोर्ड में उनके प्रभावशाली योगदान के लिए जीटी स्कूल टाइम अचीवमेंट अवार्ड से भी सम्मानित किया गया। एमिटी इंटरनेशनल स्कूल सेक्टर 06 वसुंधरा की मेंटर शिक्षिका श्वेता तोमर और एमिटी इंटरनेशनल स्कूल सेक्टर 43 गुडगांव की शालिनी रामौल को सर्वश्रेष्ठ मेंटर शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

वरिष्ठ पत्रकार सुश्री मेघा ममगाईं ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि वर्तमान में डिजिटल मीडिया और पत्रकारिता के बारिकियों को समझना आवश्यक है।

प्रख्यात पत्रकार सुश्री कीर्ति कादम्बरी ने भी छात्रों को संबोधित किया।

एमिटी विद्यालय समूह की चेयरपरसन डा अमिता चौहान ने कहा कि जीटी अवार्ड रचनात्मकता को मंच देने का माध्यम है जहाँ छात्र अपने लेखन कौशल को निखारते है। उन्होंने छात्रों को जीवन में एक लक्ष्य रखने और अच्छे विचारों को पोषित करने के लिए प्रेरित किया।

अभाविप की नोएडा महानगर कमेटी गठित

डॉ. राजीव प्रताप बने अध्यक्ष, अभिजीत शर्मा महामंत्री, अमन चौधरी को सहमंत्री बनाया

नोएडा (चेतना मंच)। नोएडा में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (ए.बी.वी.पी.) की नोएडा महानगर इकाई की नई कार्यकारिणी की घोषणा की गई। इस अवसर पर डॉ. राजीव प्रताप को पुन: महानगर अध्यक्ष चुना गया, जबकि महानगर मंत्री पद की जिम्मेदारी अभिजीत शर्मा को सौंपी गई। साथ ही, अमन चौधरी को महानगर सहमंत्री नियुक्त किया गया।

इस अवसर पर महानगर अध्यक्ष डॉ. राजीव प्रताप ने कहा, एबीवीपी निरंतर राष्ट्र निर्माण और छात्रहित के कार्यों में समर्पित रही है। हम युवाओं को संगठित कर शिक्षा, संस्कृति और समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दे रहे हैं।

महानगर मंत्री अभिजीत शर्मा ने कहा कि एबीवीपी मेरे लिए केवल एक संगठन नहीं, बल्कि एक विचारधारा है। मुझे जो जिम्मेदारी दी गई है, मैं उसे पूरी निष्ठा और प्रतिबद्धता से निभाने का प्रयास करूंगा।

महानगर सहमंत्री अमन चौधरी ने कहा कि एबीवीपी से जुड़ना मेरे जीवन का महत्वपूर्ण निर्णय रहा है। हम छात्र हितों की रक्षा के लिए हर संभव प्रयास करेंगे और संगठन को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएंगे।

नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट से यात्रा का सुखद अनुभव देगी रैपिडो

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। नोएडा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे (NIA) से यात्रियों को अंतिम मील यात्रा अनुभव को बेहतर बनाने के लिए राइड शेयरिंग प्लेटफॉर्म रैपिडो के साथ एक साझेदारी की है। इस सहयोग का उद्देश्य यात्रियों को टर्मिनल से बाहर निकलते ही एक सुगम, सुरक्षित और तकनीक-सक्षम परिवहन विकल्प उपलब्ध कराना है।

इस साझेदारी के तहत रैपिडो हवाई अड्डे के भीतर एक पिक-अप जोन तैयार करेगा जहां यात्रियों को जमीनी सहायता और स्पष्ट दिशानिर्देश मिलेंगे। इससे टर्मिनल से बाहर निकलते ही यात्रियों को अपने ड्राइवर तक पहुंचने में किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं होगी। साथ ही, ड्राइवर-पार्टनर्स को भी एयरपोर्ट परिसर में निर्धारित पार्किंग स्लॉट दिए जाएंगे।

नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के सीईओ क्रिस्टोफ श्नेलमैन ने इस साझेदारी पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा, 'जैसे-जैसे हम यात्रियों का स्वागत करने की तैयारी कर रहे हैं, टर्मिनल से बाहर का सफर भी उतना ही सुगम और तनावमुक्त होना चाहिए। रैपिडो के साथ यह साझेदारी हमारी उस सोच को दर्शाती है जिसमें हम हर यात्री को सुलभ और भरोसेमंद मोबिलिटी विकल्प देना चाहते हैं।'

रैपिडो के एवीपी (कैब्स) राजीव भैरवी ने कहा कि एनआईए के साथ साझेदारी हमारे लिए गौरव की बात है। एयरपोर्ट से यात्रियों को सीधे, सुगम और टेक-इनेबल्ड ट्रांजिट देने का हमारा लक्ष्य इस सहयोग के माध्यम से साकार होगा।

रैपिडो की ओर से मिलेंगी ये सुविधाएं

- मोबाइल ऐप के माध्यम से रीयल-टाइम राइड ट्रैकिंग और ETA।
- कैशलेस भुगतान विकल्प, जिससे भुगतान सुरक्षित और आसान होगा।
- ड्राइवर और वाहन की पूरी जानकारी, साथ ही ऐप में इमरजेंसी/SOS बटन जैसी सुरक्षा सुविधाएं।
- बाइक टैक्सी, ऑटो और कैब जैसी विविध राइड श्रेणियां।
- 24म7 सेवा उपलब्धता, ताकि हर उड़ान के लिए उपयुक्त कनेक्टिविटी मिल सके।

GRV BUILDCON
Concept to reality
ARCHITECTURE/ CONSTRUCTION / INTERIORS
WE DON'T DESIGN HOME/ OFFICE
WE DESIGN DREAMS!
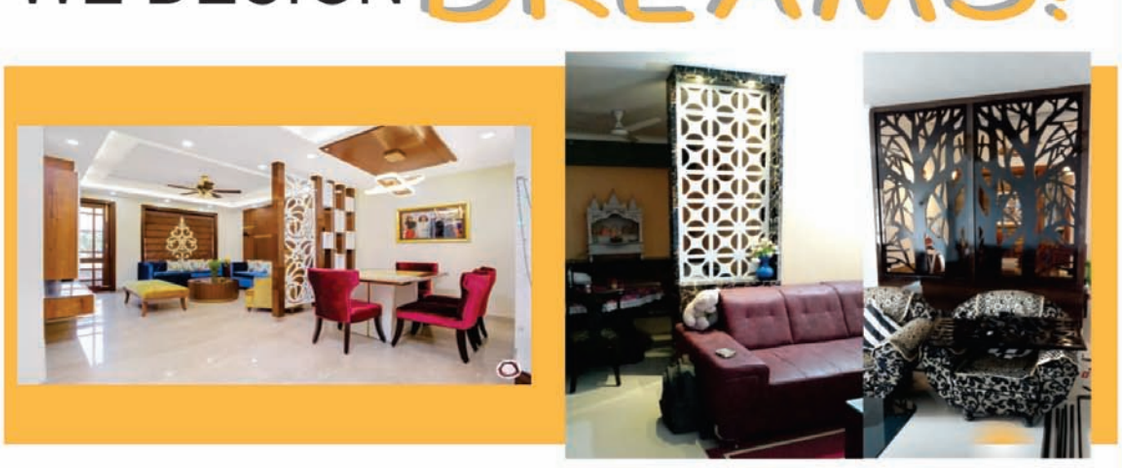
Certified by :
ISO 9001 CERTIFIED
startupindia
MSME
Contact Us : 9999472324, 9999082512
www.grvbuildcon.com